31 मार्च, 2016

विश्व मामलों की भारतीय परिषद
सप्रू हाउस, बाराखंभा रोड
नई दिल्ली

गतिविधि और प्रतिक्रिया : रूस और नाटो के बीच

डॉ. इन्द्राणी तालुकदार*

2014 से यूक्रेन संकट के कारण रूस और उत्तरी अटलांटिक सन्धि संगठन (नाटो) के बीच तीव्र क्रिया और प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई। यूक्रेन दोनों पक्षों के शक्ति प्रदर्शन का युद्धस्थल बन गया और संकट उसी दीर्घकालिक स्थिति में बना रहा। यूक्रेन संकट के अतिरिक्त सीरिया का गृहयुद्ध जो पाँच वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ था और अब भी जारी है, ने रूस तथा नाटो के बीच युद्धोन्माद को और भी अधिक तीव्र कर दिया।

मार्च 2014 में रूस के क्रीमिया पर आक्रमण ने दोनों पक्षों की छटपटाहट को बढ़ा दिया। इस दिशा में अनेक कदम उठाये गये जो वार्ता और रणनीतिक दोनों प्रकार से सकारात्मक सम्बन्ध निर्मित करने में सहायक नहीं रहे जिससे संघर्ष की स्थिति और प्रबल हो गयी। नाटो तथा रूस के मध्य समस्त नागरिक और सैन्य सहयोग के निलम्बन, नाटो के विदेश मन्त्री की पूर्वी यूरोप में रक्षा सहयोग पर परिचर्चा और पूर्व सोवियत ब्लॉक के साथ सैन्य सहयोग कुछ ऐसे कदम हैं जिसने स्थिति को और भी विकृत कर दिया।

स्रोत : जोखिम सलाहकार समूह[11]

क्रिया और प्रतिक्रिया

2014 से दोनों पक्षों द्वारा युद्धों की अनेक शृंखलाएँ संचालित हुई। विशेष रूप से पूर्वी यूरोप की सीमाओं जैसे एस्टोनिया, लातविया, लिथुआनिया में संचालित ये युद्ध सेना की पहुँच प्रदर्शित करती है। रैण्ड द्वारा संचालित युद्धों पर एक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नाटो इन देशों की रक्षा करने की उत्तम स्थिति में नहीं है। रूस को इन देशों की सीमाओं तक पहुँचने में 36 से 60 घण्टे लगेंगे। इन देशों में नाटो का कोई सैन्य अड्डा न होने के कारण सहयोग का साथ छोड़ने से नकारात्मक परिणाम आयेंगे, उदाहरणार्थ बाल्टिक लोगों के लिए भयावह परिणाम जो नाटो सदस्यों को प्रभावित करेंगे और इसमें रूस के साथ खुला आक्रामक संघर्ष होगा तथा उस संघर्ष में बढ़ोत्तरी होगी।[iii] इसके अतिरिक्त, रूस इस क्षेत्र से आसानी से अपने प्रभाव को समाप्त नहीं होने देगा।

सितम्बर, 2014 में कार्डिफ में सम्पन्न नाटो सम्मेलन के बाद तत्कालीन नाटो प्रमुख एण्डर्स फोघ रसमुसेन ने कहा कि यह गठबन्धन रूस के विरुद्ध तैयारी की योजना अपनायेगा। फरवरी, 2015 में नाटो ने पूर्वी यूरोप में अपनी सैन्य शक्ति को दोगुना करने का निर्णय लिया। भविष्य में नाटो थल, जल, वायु एवं विशेष सैनिकों से सज्जित लगभग 40,000 सैनिकों को तैयार करेगा (वर्तमान में यह 13,000[iv] है)।[v] फरवरी, 2016 में नाटो ने वर्तमान एनआरएफ को 13,000 टुकड़ियों से बढ़ाकर 40,000 करना सुनिश्चित किया है और पोलैण्ड, बल्गेरिया तथा रोमानिया एवं एस्टोनिया के बाल्टिक राज्यों, लातविया एवं लिथुआनिया में छः लघु मुख्यालय सृजित करने की अनुमति दी है।[vi] इसी समय जेसिन, पोलैण्ड में

पूर्वी यूरोप के मुख्यालय के रूप में कार्यरत नाटो का पूर्वी यूरोप स्थित मुख्यालय क्षेत्रीय सहयोग हेतु केन्द्र के रूप में अधिक क्षमताएँ प्राप्त कर रहा है और अपनी तत्परता को उन्नत कर रहा है[vii] और इसके भविष्य में विस्तार की योजना है।[viii] इसने समग्र एनआरएफ संरचना के भीतर अत्यन्त उच्च तत्परता संयुक्त कार्य बल (वीजेटीएफ) रखने का निर्णय किया है। वीजेटीएफ में लगभग 5,000 टुकड़ियों की एक बहुराष्ट्रीय ब्रिगेड होगी।[ix]

नाटो ने एस्टोनिया, लातविया तथा लिथुआनिया में एयर-पॉलिशिंग मिशन में लड़ाकू विमानों की संख्या में वृद्धि (चार से सोलह) की है। इसने पोलैण्ड तथा रोमानिया में टोही उड़ानों के लिए नियमित विमानस्थ चेतावनी तथा नियन्त्रण प्रणाली प्रारम्भ की है और बाल्टिक सागर, काला सागर तथा भूमध्यसागर में नियमित जलीय गश्ती प्रारम्भ कर दी है। इसने अनेक महत्त्वपूर्ण स्थलीय, वायवीय तथा जलीय अभ्यासों को संचालित किया है। कुछ सहयोगियों ने राष्ट्रीय स्तर पर अतिरिक्त कदम उठाये हैं जो नाटो के अभियान के पूरक हैं, जैसे बाल्टिक राज्यों, पोलैण्ड तथा रोमानिया में अमेरिकी ब्रिगेड कम्बैट टीम (बीसीटी) से 160 सैनिक गश्त लगा रहे हैं जहाँ वे स्थानीय बलों को प्रशिक्षित करेंगे[x]

सितम्बर, 2015 में नाटो के सदस्य राष्ट्रों ने पूर्वी यूक्रेन में रूसी अलगाववादियों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए यूक्रेन सरकार को हथियारों की आपूर्ति की; नाटो आपूर्तियों की रिपोर्ट से इनकार करता है।[xi] फिर भी, इस गुट ने सैन्य संगठन में सुधार, रक्षा सुधार, रक्षा शिक्षा, साइबर रक्षा, आदेश, नियन्त्रण तथा संचार, लॉजिस्टिक्स एवं सैन्य कैरियर पारगमन जैसे क्षेत्र में सरकारी अधिकारियों के साथ कार्य करने के लिए परामर्शदाताओं को कीव भेजा।[xii]

इसी वर्ष के इसी माह में नाटो सदस्यों ने यूक्रेन के साथ 'रैपिड ट्राइडेंट' नामक एक सैन्य अभ्यास संचालित किया। यूक्रेनी तथा अमेरिकी नौसेनाओं ने काला सागर के उत्तरी-पश्चिमी भाग में संयुक्त नौसैनिक अभ्यास आयोजित किया। यह अभ्यास 2006 से संचालित किया गया; इससे रूस के गले यह भली प्रकार नहीं उतरी क्योंकि उस समय यूक्रेन सरकार और रूसी अलगाववादियों के बीच संघर्ष चल रहा था।[xiii]

जवाबी उपायों में अपने रक्षा निर्माण, रूसी सीमाओं के निकट मिसाइल रक्षा प्रणालियों की तैनाती तथा सैन्य अभ्यास के अतिरिक्त नाटो इस क्षेत्र में रूसी प्रभाव को दुर्बल करने के लिए मोंटेनेग्रो जैसे पूर्व-सोवियत के राष्ट्रों के साथ हाथ मिलाने का प्रयास भी कर रहा है।

दिसम्बर, 2015 में नाटो के विदेश मन्त्रियों ने इस गुट में शामिल होने के लिए प्रारम्भिक वार्ता शुरू करने के लिए मोंटेनेग्रो को आमन्त्रित किया। नाटो के अनुसार, यह मोंटेनेग्रो, पश्चिमी बाल्कन देशों तथा

नाटो की सुरक्षा मजबूत करने के लिए किया गया था।[xiv] मोंटेनेग्रो को आमन्त्रण तथा उसकी तत्परता को रूस ने सकारात्मक रूप से नहीं लिया गया।

नाटो में शामिल होने के लिए मोंटेनेग्रो की इच्छा रूस के लिए खतरे वाली समस्या है। पहले ही मोंटेनेग्रो ने नाटो की सदस्यता कार्य योजना, जिसमें इस गुट में शामिल होने वाले देशों को सहायता तथा सहयोग का प्रस्ताव है, के संरक्षण में अनेक राजनीतिक, वैधानिक तथा सैन्य सुधारों का उपक्रम किया है। इस सदस्यता से मोंटेनेग्रो एक क्षेत्रीय नेता बन जायेगा और एक दशक से भी कम अत्यन्त छोटा और पुराना देश अपनी पर्याप्त राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं के साथ इतनी लम्बी छलांग लगा सकता है, इसका एक उदाहरण बनेगा। इससे मकदूनिया, बोस्निया तथा हर्जगोविना जैसे अन्य देशों को सम्भावित सदस्यता के लिए आवश्यक सुधार पुन: ऊर्जान्वित करने के लिए प्रेरणा मिलेगा जो दोनों देशों में निष्क्रिय हो गयी है।[xv]

रूस ने दिसम्बर 2015 में अघोषित "आक्रामक अभ्यास" संचालित किया जिसमें उसने नौसैनिक अभ्यास के रूप में रूसी काला सागर जहाजी बेड़े से अपनी नयी पीढ़ी के बैस्टियन सागरतटीय रक्षा प्रणाली का परीक्षण किया।[xvii] मार्च, 2015 में रूसी लड़ाकू बमवर्षक विमानों ने आक्रमण की स्थिति में अभ्यास के लिए कालासागर में नाटो युद्ध प्रणाली का उपयोग किया; अक्टूबर, 2014 में कैलिनिनग्राद की सीमा पर अन्तर्राष्ट्रीय वायुक्षेत्र में रूस द्वारा स्वीडिश रेकॉन एयरक्राफ्ट को रोका गया[xviii] और जनवरी, 2015 में ब्रिटिश लड़ाकू जेट विमानों ने रूसी लड़ाकू जेट विमानों को रोक दिया क्योंकि वे दूसरी बार इंग्लैण्ड के वायुक्षेत्र में पहुँच गये थे।[xix] 02014 और 2015 के बीच रूस और नाटो के बीच अनेक उकसावे वाली घटनाएँ घटित हुईं जो 2016 तक जारी रहीं।

5-10 दिसम्बर, को रूस ने कैलिनिनग्राद में एक अभ्यास पर ध्यान केन्द्रित किया जिसमें 9,000 सेवाकर्मी, 250 टैंक और एपीसी, 100 से अधिक तोपखाने की इकाइयाँ, 55 युद्धपोत तथा इसकैण्डर बैलिस्टिक मिसाइल प्रणाली शामिल थे।[xx] बाल्टिक सागरीय राष्ट्रों के विरुद्ध पीएसकोव से 76वीं गार्ड्स एयर एसाल्ट डिवीजन से ब्रिगेड साइड की वायुवाहित इकाई से अचानक आक्रमण किया गया। इस अभ्यास में नाभिकीय क्षमता से युक्त सामरिक उड़ानें, टीयू-95 बीयर स्ट्रेटेजिक बमवर्षक तथा टीयू-22एम बैकफायर लम्बी दूरी के बमवर्षक भी शामिल किये गये।[xxi] 16 फरवरी, 2015 को इसने पश्चिमी रूस में अपनी पैराट्रूपर इकाई का एक "आकस्मिक निरीक्षण" संचालित किया।[xxii] इसी बीच एस्टोनियन सीमा के निकट पोस्कोव क्षेत्र में 2,000 टुकड़ियों तथा सैन्य साजोसामान की 500 इकाइयों के साथ एक अभ्यास संचालित किया गया।[xxiii] 16 मार्च, 2015 से बिना किसी पूर्व सूचना के रूस ने 45,000 टुकड़ियों, 3,000 वाहनों, 110 युद्धक विमानों, 15 सबमेरीन और 40 सतही पोतों के साथ पश्चिमी रूस में पाँच

दिवसीय 'आकस्मिक अभ्यास' संचालित किया।[xxiv] रूस की उत्तरी नौसेना पूर्ण युद्ध तत्परता के लिए लगायी गयी।[xxv]

जून 2015 में रूस द्वारा नाभिकीय अस्त्रों के बेड़े में 40 बैलिस्टिक मिसाइलों को शामिल किये जाने की घोषणा की गयी थी जो पूर्वी यूरोप की सीमाओं के निकट स्थापित की जायेंगी।[xxvi]

मौखिक संघर्ष

13 फरवरी, 2016 को म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन के दौरान नाटो के महासचिव जेन्स स्टोल्टेनबर्ग ने कहा कि 'रूस के शब्दाडम्बर, हावभाव तथा इसकी नाभिकीय बलों के अभ्यास यूरोप में आपसी विश्वास तथा स्थिरता को डाँवाडोल करते हुए अपने पड़ोसी देशों को भयभीत करने के उद्देश्य से है।' उन्होंने कहा कि नाटो द्वारा की गयी समस्त गतिविधियाँ रूसी आक्रामकता के जवाब में की गयी थीं।[xxvii] उन्होंने कहा कि रूस यूरोप की सुरक्षा व्यवस्था को अस्थिर कर रहा है। रूस को घेरने की रणनीति संवाद और रक्षा में बढ़ोत्तरी करना है।[xxviii]

श्री स्टोल्टेनबर्ग ने कहा कि नाटो संघर्ष नहीं चाहता है और हम एक नया शीतयुद्ध नहीं चाहते हैं। किन्तु नाटो को रूसी सैन्य प्रदर्शन तथा यूक्रेन की भाँति यूरोप में सीमाएँ परिवर्तित करने के लिए सैन्य शक्ति का उपयोग करने की मास्को की इच्छा का उत्तर देना होगा। वह 21वीं सदी की समस्याओं से निपटने के लिए आधुनिक भयादोहन अपनाने पर बल दे रहे थे। नाटो के अनुसार भयादोहन वापसी कर रहा है। उन्होंने कहा कि नाभिकीय बेड़े में अतिरिक्त मिसाइलें शामिल करने की रूस की घोषणा ने अन्तर्राष्ट्रीय गुट को अपनी भयादोहन क्षमता बढ़ाने के लिए विवश कर दिया है।[xxix]

नाटो प्रमुख कहा कि परम्परागत हथियारों से अलग नाटो के भयादोहन में नाभिकीय हथियार भी शामिल किये गये हैं। रूस के विदेश मन्त्री सेरेगी लेवरोव ने कहा कि रूस और पश्चिमी देशों को विश्व व्यवस्था के सुधारों के लिए सहमत होने की आवश्यकता है क्योंकि इस प्रकार का नाटो-केन्द्रित आत्माभिमान ऐसी राजनीतिक अदूरदर्शिता प्रकट करता है जिससे वास्तविक और साझा चुनौतियों के समाधान की तलाश में अत्यधिक बाधा पहुँचेगी।[xxx] रूस के राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के प्रमुख निकोले पात्रुशेव ने कहा कि नाटो के "सुरक्षात्मक" प्रकृति के विषय में कहे गये शब्द नाटो गुट के आक्रामक रवैये का आवरण मात्र है।[xxxi]

नाटो प्रमुख संयुक्त कमाण्डर जनरल फिलिप ब्रीडलोव ने 25 फरवरी को हाउस आर्म्ड सर्विसेज को कहा कि रूस अन्तर्राष्ट्रीय विश्व व्यवस्था को दुबारा लिखना चाहता है। उन्होंने कहा कि रूस के साथ काम करने का युग समाप्त हो गया है। वित्त वर्ष 2017 हेतु पेंटागन के बजट में रूस की आक्रामकता के डर को सन्तुलित करने के लिए यूरोपियन रीएश्योरेंस इनीशिएटिव (ईआरआई) के वित्तपोषण को चार गुना

बढ़ाना शामिल है।[xxxii] जनरल ब्रीडलव ने कहा कि रूस ने पश्चिम का विरोध करने का निश्चय कर लिया है और संयुक्त राज्य तथा इसके सहयोगियों के सम्मुख "अस्तित्वपरक खतरा" उत्पन्न करता है। अमेरिकी रक्षा सचिव ऐश कार्टर ने इसी बीच रूस को अपने निकटतम सहयोगियों को भयाक्रान्त करने का अपराधी ठहराया और कहा कि उन्हें सन्देह है कि मास्को नाभिकीय हथियारों पर रणनीतिक स्थिरता के प्रति अब भी प्रतिबद्ध रहेगा।[xxxiii]

'रूस, एक खतरा' की टिप्पणी पर रूस के रक्षा मन्त्रालय के प्रवक्ता आइगर कोनाशेनकोव ने कहा कि अमेरिकी सुरक्षा को तथाकथित "रूसी खतरे" की चेतावनी वाले वक्तव्य अगले वर्ष के सैन्य बजट पर कांग्रेस में परिचर्चा से सम्बन्धित हैं और पेंटागन के लिए इस "खतरे" की कल्पना "शीर्ष विक्रेता" की रही है। उन्होंने कहा कि तथा रूसी खतरे का विचार नया नहीं है। हाल ही में फरवरी में पेंटागन ने 582.7 बिलियन डॉलर रक्षा बजट प्रस्तावित किया है जो रूस, चीन तथा इस्लामिक स्टेट्स के आतंवादियों (आईएस, पूर्व का आईएसआईएस, आईएसआईएल) से उभरते खतरे पर बल देता है। प्रस्तावित बजट नाटो के सहयोगियों को आश्वस्त करने के लिए एक प्रयास में गत वर्ष के यूरोपीय रीएश्योरेंस इनिशिएटिव (ईआरआई) के निवेदन को चार गुना बढ़ाकर 3.4 बिलियन डॉलर करने का प्रस्ताव होगा।[xxxiv]

लातविया के विदेश मन्त्री एडगर्स रिंकेविक्स ने 26 फरवरी को कहा कि लातविया बढ़ते हुए रूसी संकट को देखते हुए इसके प्रतिरोध के लिए यूरोप की पूर्वी सीमा सहित नाटो से अपनी सुरक्षा में वृद्धि करने की इच्छा रखता है। रूसी अभ्यासों के बढ़ते उत्साह तथा तीव्रता, सीमा पर तैनातियों और शब्दाडम्बर से चिन्तित पूर्व का छोटा सोवियत गणराज्य अपनी रक्षा को मजबूत करने के लिए कदम उठा रहा है लेकिन नाटो की सहायता अपेक्षित है। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में रूस को साधने के लिए नाटो को और अधिक "थल सैनिकों", अधिक संख्या में और विशाल सैन्य अभ्यासों, सैन्य उपकरणों की तैनाती तथा वायु रक्षा के सशक्तीकरण की आवश्यकता है।[xxxv]

31 दिसम्बर, 2015 को प्रकाशित रूस की नेशनल सिक्योरिटी स्ट्रेटेजी स्पष्ट रूप से नाटो को एक खतरा बताती है क्योंकि यह गुट रूसी सीमाओं की ओर अपनी सैन्य संरचना में विस्तार कर रहा है (2009 की रणनीति में उल्लिखित एक 'चिन्ता' की परिकल्पना)। 2015 के इसके सैन्य सिद्धान्त ने अमेरिका तथा नाटो की गतिविधियों को "खतरे" के रूप में व्यक्त किया (रूस के सैन्य मुहावरे में खतरा एक चिन्ता का विषय है जबकि खतरा संघर्ष की चिनगारी बन सकता है), यद्यपि वैश्विक हड़ताल जैसी अनेक विशिष्ट क्षमताओं को खतरे के रूप में वर्गीकृत किया गया था।[xxxvi]

अमेरिकी गतिविधियों को खतरा मानने वाली एक अन्य समस्या जिसने रूस को सोचने पर विवश किया, वह है रूस की सीमाओं के निकट अमेरिकी सैन्य जैविक प्रयोगशालाओं का विस्तार।[xxxvii] 2010 में, पेंटागन

ने यूक्रेन में ओडेसा के मेकिनकोव एंटी-प्लेग रिसर्च इंस्टीट्यूट नामक विशाल प्रयोगशाला की स्थापना की।[xxxviii]

2011 में इसने तिबलिसी, जार्जिया में लूगर बायो लैबोरेटरी खोली।[xxxix] 2010 में पेंटागन ने कजाकिस्तान में एक केन्द्र, अलमाटी में सेंट्रल रेफरेंस लैबोरेटरी का प्रवर्तन किया। यह पेंटागन के कार्यक्रम के तहत डिफेन्स थ्रेट रिडक्शन एजेन्सी नामक एक परियोजना है।[xl] कजाकिस्तान सरकार के प्रबन्धन के तहत 2016 में प्रचालित होने वाली अलमाटी की प्रयोगशाला भी संसूचन तथा प्रत्युत्तर के लिए सक्षम हो जायेगी। (2018 तक सम्बद्ध सरकारें प्रयोगशाला के पूर्ण स्वामित्व तथा वित्तपोषण उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने लगेंगी)।[xli] ओतर की आबादी वाले क्षेत्र में स्थित एक नया रोग संसूचक त्वरित चेतावनी केन्द्र (कथित रूप से कृषि अनुसन्धान संस्थान के आधार पर-डीएनआईएसएचआई) इसकी क्षमता में जोड़ा जायेगा। माना जा रहा था कि यह 2014 तक कार्य करने लगेगा।[xlii] 2012 में अजरबैजान में जैव प्रयोगशाला का आधुनिकीकरण भी अमेरिका के सहयोग से सम्पन्न किया गया।[xliii] सैन्य-जैविक क्षेत्र में अमेरिका के साथ सहयोग के वैयक्तिक कार्यक्रम में आर्मेनिया तथा उजबेकिस्तान भी शामिल होंगे।[xliv]

2013 में कजाकिस्तान ने कुछ पत्रकारों से स्पष्ट किया कि जैविक हथियारों का कोई विकास नहीं किया जायेगा। 2015 में संयुक्त राज्य अमेरिका में जार्जिया के पूर्व राजदूत तथा जार्जिया के राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के उपसचिव बाटू कुटेलिया ने रूस के उस दावे को नकारते हुए एक लेख प्रकाशित किया जिसमें कहा गया था कि लूगर केन्द्र जार्जिया के नागरिकों के स्वास्थ्य के लिए खतरा है। जार्जिया और कजाकिस्तान ने पत्रकारों, वैज्ञानिकों और विदेशी अधिकारियों को इन क्षेत्रों का नियमित दौरा करवाया।[xlv] रूस की कुछ फिल्मी हस्तियों ने तिबलिसी केन्द्र का दौरा किया और रूस की कल्पना के विपरीत प्रयोगशाला की नागरिक प्रकृति का प्रतिवेदन तैयार करते हुए रूसी विदेशमन्त्री के लिए एक नोट तैयार किया था।[xlvi]

इसके अतिरिक्त एक जर्नल में जनवरी 2016 में एक वक्तव्य तैयार किया गया जिसमें इसने कहा कि तिबलिसी जैसा जैव-रासायनिक युद्ध "मेडिकल रिसर्च" केन्द्र पूर्ण रूप से सुसज्जित जैव-रासायनिक युद्धप्रणाली उत्पादन केन्द्र के लगभग समान है। रूस इन अनुसन्धानों तथा रोगों की टूट को यूरोप तथा रूस के लिए कयामत के रूप में देखता है और यह चिन्ता का विषय है। इन प्रयोगशालाओं को अमेरिकी सैन्य सहायता होने के कारण यह संदेह के दायरे में है।[xlvii]

रूस की एक समस्या यह है कि रूसी प्रतिनिधियों को विदेश के अमेरिकियों द्वारा केन्द्रों का दौरा करने की अनुमति नहीं दी गयी।[xlviii] रूस इस खतरे को राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति की संकल्पना में 'नये' खतरे के रूप में देखता है।[xlix] रूसी सैनिटरी सेवा रोस्पोट्रेब्नेदजोर के अनुसार 2013 में रूस में अफ्रीकी स्वाइन फ्लू

का कहर सुनियोजित आर्थिक क्षति करने की गतिविधि थी। यह एहतियाती था क्योंकि मानस, किर्गिस्तान में अमेरिकी सैन्य बेस बन्द है लेकिन अमेरिका कजाकिस्तान में सैन्य परियोजनाओं के तहत जैविक प्रयोगशालाओं में निवेश कर रहा है और प्रयोगशालाएँ खोल रहा है जो रूस का सामना करने की एक रणनीति दर्शाता है। मास्को इन्हें अपने राष्ट्रीय हितों के लिए प्रयोगशालाओं द्वारा आरोपित खतरे के रूप में देखता है।

इसी प्रकार 2008 में जार्जिया युद्ध के दौरान तत्कालीन राष्ट्रपति मेदवेदेव ने कहा कि रूस ने अगस्त 2008 में जार्जिया के साथ युद्ध के द्वारा "नाटो के पूर्व की ओर विस्तार" को निरस्त कर दिया। उनके अनुसार, यदि रूस ने विचलित किया होता तो भूराजनीतिक परिदृश्य कुछ भिन्न होता। नाटो ने कृत्रिम रूप से जिन अनेक देशों को "सुरक्षित" किया वे उनके साथ होते। यह माना जाता था कि 2004 में बुखारेस्ट सम्मेलन में अमेरिका सन्धि के तहत जार्जिया और यूक्रेन के राज्यारोहण के विरुद्ध जर्मनी तथा फ्रांस जैसे अपने कुछ प्रमुख यूरोपीय नाटो सहयोगियों के दबाव के सामने झुक गया क्योंकि पश्चिमी यूरोपीय देशों को भय था कि इससे रूस क्रुद्ध हो जायेगा। श्री मेदवेदेव ने कहा कि रूस और नाटो गुट ने "सीधी प्रतिद्वन्द्विता पुनः प्रारम्भ कर दी।"[lii]

यूक्रेन की समस्या कोई नई नहीं है। 2008 में मेदवेदेव ने कहा था कि यूक्रेन तथा जार्जिया के लिए नाटो की सदस्यता यूरोपीय सुरक्षा के लिए खतरा हो सकती है और पार-अटलांटिक सम्बन्धों को उन्नत करने के प्रयासों को क्षीण कर सकते हैं। उन्होंने कहा, "हम यूरोपीय सुरक्षा की वर्तमान संरचना के लिए इसे भयानक खतरा मानते हैं। कोई भी देश ऐसे सैन्य गुट के प्रतिनिधियों के साथ सुखी नहीं रह सकता है जो अपनी सीमाओं के निकट आने से सम्बन्धित नहीं है।"[liii] उन्होंने पूर्वी यूरोप में मिसाइल रक्षा कवच के साइट भागों में अमेरिकी योजना के प्रति रूस की नाराजगी स्पष्ट की।[liv]

क्रीमिया पर रूस के आक्रमण को यूरोप की सुरक्षा संरचना दुर्बल करने के रूप में देखा गया है। इसी प्रकार नाटो के विस्तार के प्रयास ने रूस की सुरक्षा संरचना के लिए खतरा उत्पन्न किया है। अपनी सीमाओं के निकट विदेशी सैन्य टुकड़ियों की तैनाती के किसी प्रयास के प्रति रूस की प्रतिक्रिया ठीक वैसी ही है जैसी 1961 में वाशिंगटन तब व्यक्त की थी जब रूसी सैन्य टुकड़ियाँ क्यूबा में उतरी थीं।[lv]

क्यूबा के प्रति अमेरिका द्वारा शान्ति के प्रयास तथा क्यूबा के साथ रचना सम्बन्ध निर्मित करने के प्रयास अमेरिका में असुरक्षा से संयोजित की जा सकती है जिसका लाभ रूस उठा सकता है।

समस्यापूर्ण सम्बन्ध

1975 में आर्गेनाइजेशन फॉर सिक्योरिटी एण्ड कोऑपरेशन इन यूरोप (ओएससीई) को संस्थापित करने वाले हेलसिंकी फाइनल एक्ट के अनुच्छेद I के अनुसार प्रत्येक देश को "एलायंस की सन्धियों का पक्ष होने या न होने के अधिकार सहित अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से सम्बन्ध रखने या न रखने, द्विपक्षीय या बहुपक्षीय सन्धियों का पक्ष बनने या न बनने" का अधिकार है।" रूस सहित सभी ओएससीई के सदस्य राष्ट्रों ने इन सिद्धान्तों का पालन करने की सौगन्ध खाई। उदाहरणार्थ, इन सिद्धान्तों के अनुसार नाटो मानता है कि यूक्रेन को नाटो की संस्थापक सन्धि सहित किसी भी गुट की सन्धि को चुनने का अधिकार है।[lvi]

पूर्व के सोवियत संघ और इसके उत्तराधिकारी रूस ने सदैव नाटो के प्रसार का विरोध किया है।[lvii] 1990 के उत्तरार्ध ने जब नाटो अपनी सदस्यता का विस्तार करने की तैयारी कर रहा था तो रूसी अधिकारियों ने दावा किया कि पूर्व की वारसा सन्धि के देशों का नाटो में प्रवेश पश्चिमी जर्मनी की सरकारों द्वारा किये गये औपचारिक "वायदे" का उल्लंघन होगा और 1990 में अमेरिका को पूर्व के किसी भी साम्यवादी देश को एलायन्स में नहीं शामिल करना चाहिए।[lviii] 1995 में रूस ने कहा कि यदि नाटो बाल्टिक गणराज्य को स्वीकार करने पर सहमत है तो रूसी फेडरेशन आर्म्ड फोर्स तुरन्त एस्टोनिया, लातविया और लिथुआनिया में प्रवेश कर जायेगी। इसे रोकने के नाटो के किसी भी प्रयास को रूस वैश्विक अणु त्रासदी की प्रस्तावना मानेगा।[lix] नाटो के विस्तार से सीरिया, आर्कटिक तथा अन्टार्कटिक क्षेत्र पर वर्तमान में इसके प्रभाव के साथ जटिलता भी उत्पन्न हो गयी। उदाहरण के लिए, मई 2015 के दौरान नाटो ने सुदूर उत्तरी यूरोप में एक वृहत्त वायुसैनिक अभ्यास किया। नार्वे इसका आतिथेय देश तथा और रूस की सीमा इस देश के साथ लगती है। 6 जून, 2015 तक चले इस सैन्य अभ्यास में उत्तरी नार्वे, स्वीडेन तथा फिनलैण्ड के साथ-साथ आर्कटिक महासागर भी शामिल था, ये सभी क्षेत्र उत्तरी रूस तथा रूसी उत्तरी सैन्य टुकड़ी के मुख्यालय मुरमनस्क से बहुत कम वायवीय दूरी पर हैं।[lx] 2015 में प्रकाशित रूस की अद्यतनीकृत मैरीटाइम डॉक्ट्रिन ने नाटो के प्रभाव का सामना करने तथा पश्चगामी समुद्री बर्फ द्वारा खोले गये सम्भावित नवीन जलपोत मार्ग में रूसी नौसेना की उपस्थिति के प्रसार के लिए आर्कटिक को एक मोर्चा बनाने पर बल दिया।[lxi]

रूस अन्टार्कटिक में अपने रणनीतिक हितों के विषय में भी गम्भीर है। 2009 में अन्टार्कटिक-2009 के अभियान के दौरान जिसमें शामिल साथी सांसद, संसद के चिन्तक तथा सदस्य, आर्कटिक तथा अन्टार्कटिक में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए रूसी राष्ट्रपति के विशेष प्रतिनिधि आर्थर चिलिंगरोव ने

कहा, "हम सम्पूर्ण विश्व को निश्चित रूप से दिखा रहे हैं कि हमारे पास ध्रुवीय अनुसन्धान जारी रखने की गम्भीर योजना है।"[lxii] जनवरी, 2016 में इस क्षेत्र में रूसी नौसेना के समर्थन से सामुद्रिक अनुसन्धान जलयान एडमिरल व्लादिमिरस्की पहुँच गया।

नाटो द्वारा मोंटेनेग्रो को निमन्त्रण भेजने से नाटो और रूस के बीच तनाव बढ़ गया। वास्तव में रूस के पड़ोसी देशों को नाटो द्वारा भेजे जाने वाले प्रत्येक आमन्त्रण से नाटो और रूस के बीच तनाव में वृद्धि होगी।

इन क्षेत्रों के रूस के सन्निकट होने के कारण कोई भी विस्तार नाटो के लिए (कम से कम वर्तमान में) एक समस्या उत्पन्न करेगा। रूस की सीमा से यूक्रेन 490 किमी, टैलिन 200 किमी तथा रिगा लगभग 210 से 275 किमी के बीच की दूरी पर है। उदाहरण के लिए पोलैण्ड की सीमा से रिगा की दूरी लगभग 325 किमी और टैलिन से 600 किमी है। उदाहरण के लिए, संकट के समय नाटो को कैलिनिनग्राद कॉरीडोर की लगभग 110-150 किमी दूरी पार करनी पड़ी।[lxiii] कैलिनिनग्राद ऐसा विदेशी अन्त:क्षेत्र है जिसकी सीमा लिथुआनिया और पोलैण्ड से लगती है। 2013 से रूस बड़े पैमाने पर सैन्य अभ्यास कर रहा है।[lxiv] हस्तक्षेप के सन्दर्भ में इन शक्तियों के बीच संकट के समय रूस का लाभ नाटो की अपेक्षा शीघ्र होगा।

रूस की सेनाएँ मोटरीकृत, यन्त्रीकृत और टैंक इकाइयों से युक्त हैं। इसे रणनीतिक और प्रचालनात्मक क्षेत्रों में लाभ प्राप्त है। रूस की युद्ध व्यवस्था में 10 तोपखाना बटालियन शामिल हैं (तीन ट्यूब आर्टिलरी तथा सात मल्टीपल-रॉकेट लांचर सहित)। इसी के साथ, नाटो के पास कोई स्वतन्त्र मिसाइल नहीं है और युद्ध के लए शामिल लाइट यूनिट निकृष्ट कोटि के तोपखाने से सुसज्जित हैं। नाटो के पास लाइट फोर्स है जो रूस की भारी यूनिट्स से अधिक हो सकती है। नाटो की वायुशक्ति प्रभावी करने के लिए स्थल सेना की सहायता की आवश्यकता होगी जो कि रूस की तुलना में कम है।[lxv] बाल्टिक युद्ध करने के लिए तत्पर रूस के वेस्टर्न मिलिटरी डिस्ट्रिक्ट में 65,000 थल सैनिक, 850 तोपें, 750 टैंक तथा 320 कम्बैट एयरक्राफ्ट हैं। इसकी तुलना में नाटो की सेनाएँ 10,450 थल सैनिक, 158 तोपें, तीन टैंक तथा इस क्षेत्र में भाग लेने के लिए कोई एयरक्राफ्ट नहीं है।[lxvi] नाटो की वायु पुलिसिंग में एक एयर सर्विलांस एवं कंट्रोल सिस्टम (एएसएसीएस), एक एयर कमाण्ड तथा कंट्रोल (एयर सी2) ढाँचा तथा क्यूआरए(I) एयरक्राफ्ट [क्विक रिएक्शन अलर्ट (इंटरसेप्टर)] शामिल हैं जो चौबीसो घण्टे तैयार हैं। सदस्य राष्ट्रों के पास अपनी निजी सैन्य शक्ति (अल्बानिया, एस्टोनिया, आइसलैण्ड, लातविया, लिथुआनिया, लक्जमबर्ग तथा स्लोवेनिया) के पास कोई फुल रेंज क्यूआरए (I) प्रणाली न होने पर नाटो के सदस्य राष्ट्रों के लिए सुरक्षा का एकल मानक सुनिश्चित करने के लिए समझौते हैं।[lxvii] किन्तु, नाटो ने इस क्षेत्र में सहयोगियों की आस्तियाँ प्रचालित करनी प्रारम्भ कर दी हैं। 2015 में अमेरिका ने भारी हथियारों की

तैनाती प्रारम्भ कर दी है जैसे कि एस्टोनिया में एम1 अब्राम्स युद्धक टैंक, और नाटो ने अपने ईस्टर्न यूरोपियन रैपिड रेस्पॉन्स फोर्स के आकार को बढ़ाकर 13,000 सैनिक कर दिया है।[lxviii]

इस क्षेत्र में रूस का मुकाबला करने के लिए नाटो को न्यूनतम सात नाटो ब्रिगेड और तीन हैवी आर्मर्ड ब्रिगेड की आवश्यकता होगी-जो युद्ध प्रारम्भ होने पर पूरी तरह से वायु शक्ति, जमीनी फायर सहयोग तथा युद्ध के लिए तैयार टुकड़ियों द्वारा समर्थित होगी। तोपखाने के साथ और इकाइयों को सक्षम करके तीन अमेरिकी थल सेना की सुसज्जित ब्रिगेड के लिए लगभग 13 बिलियन डॉलर की लागत आयेगी। इसके वार्षिक प्रचालन की लागत लगभग 2.7 बिलियन डॉलर होगी।[lxix]

विस्तारण के विरुद्ध रूस

1994 से, रूस की नीति विस्तारण का विरोध करनी की रही है, जो रूस के पश्चिम से सम्बन्धों पर नकारात्मक प्रभाव की चेतावनी है और इससे निर्दिष्ट या अनिर्दिष्ट प्रत्युपाय खतरे में पड़ गये हैं। इन खतरे वाले उपायों में स्टार्ट II सन्धि का अनुसमर्थन न करना, सीएफई सन्धि का निराकरण, रक्षा व्यय में बढ़ोत्तरी, रूस की सीमाओं पर रणनीतिक नाभिकीय हथियारों का जमावड़ा, स्वतन्त्र राष्ट्रमण्डल (सीआईएस) रक्षा संघ या न्यूनतम रूस-बेलारूस रक्षा संघ की स्थापना तथा चीन, भारत, ईरान या अन्य देशों के साथ गुटबन्दी बढ़ाना शामिल हैं।[lxx]

इन रणनीतियों के उपयोग द्वारा रूसी अधिकारियों को कुछ यूरोपीय नाटो देशों को समझा पाने की स्पष्ट रूप से आशा थी कि इस बढ़ोत्तरी से मास्को के साथ एक नया संघर्ष प्रारम्भ हो सकता है। कम से कम यह आशा की गयी थी कि कोई कठोर कदम उठाने से सैन्य बढ़ोत्तर पर सम्भावित रूस-नाटो वार्ता में मास्को को अत्यधिक प्रमुखता मिलेगी। नाटो के विस्तार को रूसी अभिजात्य वर्ग इसका स्पष्ट संकेत मानता है कि पश्चिमी देश रूस के साथ बराबरी की साझेदारी करने के लिए वास्तव में इच्छुक नहीं हैं, और विशेष रूप से तब जब यूरोप में रूस का अपने सुरक्षा हित के प्रति दृष्टिकोण पश्चिमी देशों की इच्छा के साथ मेल नहीं खाता है।[lxxi] 19 मई, 1997 को रूसी संसद के नेताओं को सम्बोधित करते हुए पूर्व राष्ट्रपति येल्तसिन ने चेताया था कि रूस नाटो के साथ अपने सम्बन्धों की "समीक्षा" करेगा और इससे समझौता करेगा यदि नाटो बाल्टिक राज्यों जैसे पूर्व सोवियत गणराज्य को "स्वीकार करना प्रारम्भ करता है।"[lxxii] यद्यपि सोवियत संघ के विघटन के पश्चात पश्चिमी देशों के साथ मेल-मिलाप देखा गया है किन्तु इसका प्रमुख उद्देश्य स्वयं को आर्थिक रूप से सशक्त करना है। फिर भी, पश्चिमी देशों के साथ रूस का बढ़ता हुआ मोहभंग जब भी सम्भव हो पश्चिमी देशों से अपनी आत्मनिर्भरता प्रदर्शित करने में रूस की अभिवृत्ति बढ़ेगी।[lxxiii]

1999 में रूस को विश्वास में लिये बिना जब नाटो ने यूगोस्लाविया संघीय गणतन्त्र पर बमबारी की तो यह रूस के लिए एक आघात था। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव की स्वीकृति के बिना सैन्य के प्रयोग ने न केवल रूस के वीटो अधिकारों का बल्कि पूर्व की महाशक्ति के वास्तविक अन्तर्राष्ट्रीय कद का भी अत्यधिक अवमूल्यन किया। इस क्षेत्र में प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय सैन्य गतिविधि रोकने में मास्को की अक्षमता प्रदर्शित की गयी थी जिसे वह परम्परागत रूप से यूरोप में अपनी सम्पूर्ण स्थिति के महत्त्व के रूप में देखता है। एक माह पश्चात वाशिंगटन सम्मेलन में नाटो की नवीन रणनीतिक अवधारणा का अंगीकरण तथा स्थायित्व बनाये रखने के लिए यूरोप में किसी भी जगह हस्तक्षेप करने की एलायन्स की कथित इच्छा और मानव अधिकारों ने उन विषयों में गहरा सन्देह उत्पन्न जहाँ जहाँ नाटो अगला आक्रमण कर सकता था और वह भी सम्भवत: रूस की सीमाओं के अत्यन्त निकट। ऐसे सन्देह तब और गहरे हो गये जब रूस ने वाशिंगटन सम्मेलन में शामिल होने से मना कर दिया, जॉर्जिया, यूक्रेन, उजबेकिस्तान, अजरबैजान और मोल्डोवा (गुआम) के नेताओं ने इसमें शामिल होने और स्वयं के बीच बैठक के लिए अमेरिका की राजधानी को बैठक स्थल के लिए चुना।[lxxiv]

2000 से 2008 के बीच कोई स्पष्ट तनाव नहीं था यद्यपि रूस 2004 में यूक्रेन की रंगीन क्रान्ति को लेकर परेशान था, लेकिन सैन्य दृष्टिकोण से यह आक्रामक नहीं था किन्तु 2008 में जार्जिया में रूस की सैनिक कार्यवाही के पश्चात उनके बीच कठिनाई अप्रत्यक्ष रूप से प्रारम्भ हो गयी। नाटो ने जार्जिया में रूस की कार्यवाही को "उसकी शान्तिदूत की भूमिका के असंगत तथा अनिरन्तर और हेलसिंकी फाइनल एक्ट, नाटो-रूस फाउंडिंग एक्ट और रोम घोषणा-पत्र में निर्धारित संघर्ष के शान्तिपूर्ण समाधान के सिद्धान्तों को असंगत" बताया। किन्तु 2009 में इसने व्यावहारिक और राजनीतिक सहयोग को बहाल करने का निर्णय लिया। नवम्बर, 2010 में लिस्बन सम्मेलन के दौरान आयोजित नाटो-रूस परिषद में नाटो के नेता तथा पूर्व राष्ट्रपति दमित्री मेदवेदेव फाउंडिंग एक्ट तथा नाटो-रूस रोम घोषणा-पत्र के लक्ष्यों और सिद्धान्तों पर आधारित "वास्तविक रणनीतिक साझेदारी के प्रति सहयोग के एक नये चरण" को प्रारम्भ करने पर सहमत हुए।[lxxv]

वास्तव में पूर्व राष्ट्रपति मेदवेदेव ने यूरोपीय सुरक्षा के पुनर्निर्माण का आह्वान किया जिसकी घोषणा उन्होंने पहले जार्जिया युद्ध के पूर्व की। यह इसलिए अधिक उपयोगी नहीं होता क्योंकि उन्होंने सुरक्षा पर एक नवीन, वैधानिक बाध्यकारी सन्धि का आह्वान किया बल्कि यह जारी संवाद के आमन्त्रण का प्रतिनिधित्व करने और वैधानिक रूप से बाध्यकारी होने के कारण उपयोगी नहीं होता।[lxxvi] आगामी वर्षों में 2013 तथा 2014 के प्रारम्भ में नाटो तथा रूस ने मिलकर अफगान सेना के हेलीकॉप्टर फ्लीट का समर्थन किया, संयुक्त रूप से समुद्री डकैती रोकने और सबमेरीन बचाव के अभ्यास का संयुक्त संचालन किया और सीरिया के रासायनिक हथियारों को समाप्त करने में सहायता के लिए संयुक्त सैन्य अभियान

पर चर्चा की।[lxxvii] किन्तु 2014 का यूक्रेन संकट वर्तमान संकट का प्रारम्भिक बिन्दु था जिससे खुले संघर्षपूर्ण वक्तव्य प्रारम्भ हुए और रूस और नाटो के बीच सैन्य प्रतिस्पर्द्धा में वृद्धि हुई।

रूस रणनीतिक काला सागर क्षेत्र में प्रभावी ढंग से शक्ति के सन्तुलन को पुन: विन्यासित करने का प्रयास कर रहा है। 2020 तक रूस की योजना आधुनिकतम जलपोतों और सबमेरीन तथा समेकित वायु रक्षा एवं जल-स्थलीय लैण्डिंग क्षमताओं सहित काला सागर फ्लीट पर 2.4 बिलियन डॉलर व्यय करने की है। 2007 में सेवास्तोपोल, यूक्रेन में रूसी काला सागर फ्लीट मुख्यालय में एक भाषण के दौरान तत्कालीन रूसी नौसेना के कमाण्डर एडमिरल व्लादिमिर मैसोरिन ने फ्लीट पर कहा था कि "फ्लीट का प्रचालनात्मक क्षेत्र काला सागर और भूमध्य सागर से लेकर अटलांटिक महासागर तक विस्तृत है। यह यूरोप, एशिया और अफ्रीका का क्रॉस रोड है और यहाँ हमें रूसी नौसेना की स्थायी उपस्थिति पुन: स्थापित करनी होगी।" पश्चिमी विश्लेषण के अनुसार यदि रूस टार्टस, सीरिया में अपने सैन्य अड्डे के उन्नयन का कार्य पूर्ण कर लेता है तो काला सागर पर अपने प्रभाव के कारण मास्को दीर्घकालीन अवधि में "भूमध्य सागर में अपेक्षाकृत बड़ी सेना बनाये रखने में" समर्थ हो जायेगा। काला सागर पश्चिमी एशिया में रूसी कार्यवाहियों के लिए "प्रमुख लॉजिस्टिकल प्लेटफॉर्म" है और पूर्वी मध्य सागर में मास्को 10 जलपोत तैनात करने में समर्थ हो सकेगा।[lxxviii]

नाटो सैन्य अभ्यासों की "तीव्रता" के प्रत्युत्तर में रूस 2016 में थल सेना की चार नई डिवीजन बनाने की योजना बना रहा है। इनमें से एक डिवीजन केन्द्रीय सैन्य समूह के साथ तैनात किया जायेगा जबकि शेष तीन रूस की पश्चिमी सैन्य शक्ति समूह के साथ तैनात होगा।[lxxix]

दिसम्बर, 2015 में प्रकाशित रूस की नवीन राष्ट्रीय सुरक्षा नीति भी घरेलू उद्योग के आधुनिकीकरण हेतु प्रेरक बल के रूप में रूस के रक्षा क्षेत्र को प्राथमिकता देती है। इसमें नवीन संयोजन के रूप में अर्थव्यवस्था को विविधीकृत करना, कच्चे माल पर निर्भरता समाप्त करना, तकनीकी विकास का नया स्तर अपनाना और युक्तिसंगत आयात विकल्प अपनाने की आवश्यकता शामिल की गयी है। यद्यपि इस आधुनिकीकरण का कारण आर्थिक बताया गया है किन्तु यह नाटो द्वारा रूस की घेरेबन्दी के विषय में एक भय के कारण भी है। रूसी सुरक्षा परिषद के प्रमुख पात्रुशेव ने कहा कि नाटो की गतिविधियों से जुड़े खतरे रूस के लिए भयंकर खतरे को प्रदर्शित करते हैं। उन्होंने कहा कि आक्रामक को बढ़ाने और आधुनिकीकृत करने की तीव्र इच्छा, नये प्रकार के हथियारों की तैनाती, रूस के आसपास वैश्विक मिसाइल रक्षा प्रणाली का सृजन वैश्विक सुरक्षा की संरचना को समाप्त करती है। उन्होंने यह भी कहा कि अनेक पश्चिमी देशों द्वारा समर्थित अमेरिका वैश्विक मामलों में अपना प्रभाव बनाये रखने की योजना बना रहा है और इस प्रकार वह रूस की स्वतन्त्र विदेशी तथा घरेलू नीति को बाधित करने का प्रयास कर रहा है।[lxxx]

भय का कारण : रूसी दृष्टिकोण

मध्य तथा पूर्वी यूरोप के देशों को शामिल करने के लिए नाटो की विस्तारवादी प्रक्रिया रूस के उद्भव में एक प्रभावी चिन्ता बन गया है। 15 सितम्बर, 1993 को पूर्व राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन ने अमेरिकी राष्ट्रपति तथा पश्चिम के अन्य नेताओं के पास एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने नाटो में मध्य तथा पूर्वी देशों के सम्भावित प्रवेश का विरोध किया। उन्होंने इंगित किया कि यह रूसी समाज पर एक नकारात्मक प्रतिक्रिया को उकसाने वाला निर्णय है। उन्होंने इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया कि यह विस्तारीकरण अवैध होगा क्योंकि सितम्बर, 1990 में जर्मनी के परिप्रेक्ष्य में फाइनल सेटलमेंट की सन्धि और विशेष रूप से एफआरजी के पूर्वी क्षेत्र में विदेशी सेनाओं की तैनाती का निषेध करने वाले इसके प्रावधान इसके अर्थ में नाटो क्षेत्र के पूर्व में विस्तार की सम्भावना को वर्जित करता है।[lxxxi]

नाटो के मौलिक संस्थापनात्मक सिद्धान्त के कारण इस संगठन के गठन से ही रूस चिन्तित है जो साम्यवाद का पक्षधर है। अमेरिका के महाशक्ति के रूप में उभरने के कारण मास्को की अन्य चिन्ता विश्व पर अमेरिका का एकपक्षीय प्रभाव तथा रूस की महत्वाकांक्षाओं और शक्ति का संकुचन होना है।

1996 में नाटो के विस्तारीकरण की अमेरिकी नीति पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की समिति हाउस ऑफ रिप्रेजेन्टेटिव्स में एक भाषण के दौरान वरिष्ठ उप सहायक सचिव, ब्यूरो ऑफ यूरोपियन एण्ड कैनेडियन अफेयर्स, डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट श्री रुडोल्फ वी. पेरिना ने कहा कि नाटो यूरोप में अमेरिकी नीति को बरकरार रखता है। इस महाद्वीप में शान्ति के लिए यह एक अनिवार्य संगठन है। विस्तारीकरण प्रक्रिया तथा इस क्षेत्र में शान्ति से 21वीं शताब्दी में अमेरिका की राजनीतिक और सुरक्षा हितों की रक्षा होगी। उन्होंने कहा कि नाटो के विस्तारीकरण से शीत युद्ध के दौरान उत्पन्न "गैरकानूनी कृत्य" समाप्त करने में मदद मिलेगी। यह यूरोप में लोकतन्त्र की रक्षा करने के लिए है। 1996 के नाटो के विस्तारीकरण दस्तावेज के अनुसार नये सदस्यों (जिन्हें 1995 की विस्तारीकरण प्रक्रिया में शामिल किया गया था) के क्षेत्र में नाभिकीय अस्त्रों की तैनाती का अधिकार सुरक्षित है। साथ ही, श्री पर्निया ने कहा कि नाटो ने सदस्यों के विस्तारीकरण में शामिल न करने के लिए रूस से कोई वायदा नहीं किया है। लोवा के प्रतिनिधि जेम्स लीच ने कहा कि नाटो रूस की चिन्ताओं के प्रति संवेदनशील है लेकिन साथ ही यह समझ गया है कि रूस इस क्षेत्र में नाटो के विस्तारीकरण के लिए कभी सहमत नहीं होगा।[lxxxiii]

जून 1996 में यूनाइटेड स्टेट्स हाउस ऑफ रिप्रेजेन्टेटिव्स की 104वीं कांग्रेस के दूसरे सत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की समिति के समक्ष सुनवाई के दौरान हंगेरियाई अमेरिकी एवं मध्य तथा पूर्वी यूरोपीय संगठन की ओर से मेट्रोपोलिटन वाशिंगटन डीसी के अमेरिकी हंगेरियाई महासंघ के अध्यक्ष फ्रैंक कोस्जोरस जूनियर, ने कहा कि संगठन का दृढ़ विश्वास है कि दीर्घकालीन राष्ट्रीय सुरक्षा और अमेरिका के आर्थिक

हितों के लिए मध्य एवं पूर्वी यूरोपीय देशों को पूर्ण रूप से लोकतान्त्रिक बनाने और मुक्त बाजार राष्ट्र बनाने के लिए दृढ़ प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। समिति ने कहा कि इस प्रतिबद्धता के लिए इस क्षेत्र में अमेरिका का हस्तक्षेप आवश्यक है। इसका यह भी विश्वास है कि साम्यवाद तथा सोवियत संघ के विघटन के बाद यूरोप में शान्ति, स्थिरता और लोकतन्त्र के लक्ष्य हासिल किये जा सकते हैं। इसके अनुसार इन सबको सफलतापूर्वक हासिल करने के लिए अमेरिका तथा पश्चिमी देशों की सतत संलिप्तता, समर्थन और सहयोग महत्त्वपूर्ण है। समिति का विश्वास है कि इस क्षेत्र की स्थिरता और सुरक्षा नाटो के विस्तार के माध्यम से उचित ढंग से बनाये रखी जा सकती है।[lxxxiv]

इसके अनुसार सोवियत संघ के विघटन से मध्य और पूर्वी यूरोप में सुरक्षा का निर्वात उत्पन्न हो गया था अत: पश्चिमी देशों के साथ तेजी से पुन: एकीकरण होना नाटो के हित में था। समिति का विश्वास था कि पश्चिम के साथ एकीकरण से इन देशों में सुरक्षा का एक भाव उत्पन्न होगा और लोकतन्त्र के स्थायित्व में सहायता मिलेगी। समिति का ध्यान उन देशों पर था जो लोकतन्त्र की अवधारणा, बाजारी अर्थव्यवस्था, सेना पर नागरिक नियन्त्रण और मानव एवं अल्पसंख्यक अधिकारों के प्रतिबद्ध थे जो अमेरिका की विदेश नीति के हित के अनुकूल भी थे। विस्तारीकरण प्रक्रिया में समिति का निश्चय था कि रूस को इसमें अपने वीटो पावर का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उनकी ओर से चेतावनी भी थी कि यदि पश्चिम अनिश्चय में था तो इससे रूसी राष्ट्रवादियों की विस्तारवादी अभिवृत्ति को प्रोत्साहन मिलेगा और इससे अमेरिका तथा पश्चिमी देशों की विश्वसनीयता समाप्त हो जायेगी।[lxxxv] रूस को छोड़कर वारसा सन्धि के सभी सदस्य नाटो में शामिल हुए। शीतयुद्ध के पश्चात विस्तारीकरण के प्रथम चक्र में चेक गणराज्य, पोलैण्ड और हंगरी 1999 में नाटो में शामिल हुए[lxxxvi] 2004 में बल्गेरिया, एस्टोनिया, लातविया, लिथुआनिया, रोमानिया, स्लोवाकिया और स्लोवेनिया एलायंस में शामिल हुए।[lxxxvii] जिस प्रकार रूस के अपने भय हैं उसी प्रकार नाटो के भी रूस से अपने भय हैं।

भय के कारण : नाटो का दृष्टिकोण

रूस और नाटो के बीच परस्पर खतरों और प्रति खतरों की गाथा नई नहीं है। इसका कारण रूस और नाटो के बीच अविश्वास की बहुत बड़ी खाई है जो नाटो के उदय और पूर्व की वारसा सन्धि के सम्बन्धों में लिपटी हुई है।

यूरोपियों का प्रमुख खतरा "वैकल्पिक मूल्यों के साथ वैकल्पिक यूरोप" है, जैसे कि विलगीकरण, असहिष्णुता और मानव अधिकारों का असम्मान।[lxxxviii] किन्तु, इन चिन्ताओं के अतिरिक्त, वास्तविक सहयोग के लिए एक साथ न हो पाने की अक्षमता का प्रमुख कारक शक्ति का प्रतीक तथा अविश्वास से सम्बद्ध जटिलता है। रूस स्वयं के लिए बराबरी और सम्मानित साझेदारी का स्तर चाहता था जबकि

पश्चिम रूस की प्रभावकारी महत्त्वाकांक्षाओं और उसके पड़ोसी देशों में इसकी शक्ति की स्थापना के विरुद्‌ध था और रूस को अपनी समकक्षता में स्वीकार नहीं करना चाहता था।

नाटो पश्चिमी देशों के उस साम्राज्यवाद के विरुद्‌ध रूस की चिरस्थायी प्राचीर के रूप में उसकी भूराजनीतिक महत्ता से परेशान है जिसने सदियों पुराने संघर्ष को हवा दी।[lxxxix] संगठित राष्ट्र के रूप में अपने उदय के समय से ही रूस पश्चिमी देशों का विरोध करता रहा है। एक सहस्राब्दी से अधिक समय से दोनों के मध्य आर्थिक, राजनीतिक और सैन्य संघर्ष बना रहा है जिसमें उन देशों का प्रयोग किया गया जो दोनों देशों के बीच बफर के रूप में प्रतिस्पर्द्‌धा के लिए एक स्थल हो सकते हैं। 20वीं शताब्दी के दौरान अमेरिका द्‌वारा रूस के प्रभाव को समाप्त करने के लिए प्रारम्भ की गयी एक धारण नीति सदैव अस्तित्व में रही है। अमेरिका की सीमित करने की नीति अर्थात यूरेशियाई भूमि पर उस क्षेत्रीय प्रभुत्व के उदय को रोकना जो पश्चिमी एलायंस संरचना को चुनौती दे सकता है, कभी समाप्त नहीं हुई। इस प्रकार नाटो और यूरोपीय संघ विस्तार प्रक्रिया में संलग्न रहे।[xc] राजस्व के कारण रूस जो आर्थिक विकास कर रहा था उसके परिणामस्वरूप ऊर्जा की ऊँची दरों ने इसे पुन: क्षेत्रीय शक्ति बनने में सहायता की जो कि पश्चिमी देशों के लिए चिन्ता का विषय था।

रूस द्‌वारा यूरोप में गैर-रूसी भाषी अल्पसंख्यकों के प्रति विनाशकारी राजनीति के माध्यम से पश्चिमी देशों को अस्थिर करने रूसी भाषी अल्पसंख्यकों के प्रति हमवतनी नीति अपनाने के कारण नाटो असहज है।[xci]

रूस तथा पश्चिमी देशों के बीच सम्बन्धों में अनेक दरार पैदा करने वाले यूक्रेन तथा सीरियाई संकट के कारण यूरोप में व्याप्त युद्‌ध जैसे वातावरण के कारण यह समझना सरल होगा कि यूक्रेन और सीरिया में इसके अभियान नाटो के प्रत्युत्तर में रहे हैं। किन्तु नजदीक से देखने पर ऐसा प्रतीत होत है कि यह समस्या नई नहीं है बल्कि इसका मूल कारण नाटो की स्थापना के पीछे छिपा है। 13 फरवरी, 2016[xcii] को जर्मनी के म्यूनिख में आयोजित 52वें सुरक्षा सम्मेलन की बैठक के दौरान अमेरिकी सचिव जॉन कैरी ने कहा कि अमेरिका और यूरोप रूस की निरन्तर आक्रामकता के विरुद्‌ध साथ रहेंगे और कहा कि यूक्रेन पर संयुक्त दृष्टि रखने के अतिरिक्त वाशिंगटन की योजना यूरोपीय सुरक्षा सहायता को चार गुना बढ़ाना है। इससे अमेरिका को यूरोप में एक डिवीजन के लिए उपकरणों को स्थापित करना तथा मध्य एवं पूर्वी यूरोप में अतिरिक्त युद्‌धक ब्रिगेड की तैनाती करना सरल होगा।[xciii]

नाटो कठोर एवं मृदु शक्तियों से मिश्रित "संकर युद्‌ध"[xciv] के विषय में चिन्तित है जिसे रूस ने विशेष रूप यूक्रेन संकट के विषय में दर्शाया है।

कमियों की स्थिति

रूस और नाटो के बीच प्रतिस्पर्द्धा की जड़ युद्धप्रियता की उनकी महत्त्वाकांक्षा और एक-दूसरे को सीमित करने में निहित है। दोनों में युद्धप्रिय प्रवृत्तियों के अतिरिक्त सीमित करने की नीति दोनों के बीच निहित अविश्वास के कारण भी है।

इन दोनों के मध्य फाउण्डिंग अधिनियम भी इसे स्पष्ट करता है। एक समय रूस ने एलायंस का अंग बनने का प्रयास किया था। सोवियत संघ के काल के दौरान पहली बार अस्वीकार हो जाने के पश्चात रूस ने 1990 में और इस दशक के प्रारम्भ में भी पुन: प्रयास किया।[xcv] 21 दिसम्बर, 1991 को रूस के पूर्व राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन ने नाटो के पास लिखा कि आशा है कि रूस को भविष्य में किसी भी समय एलायंस में शामिल कर लिया जायेगा। अपने पत्र में श्री येल्तसिन ने कहा, "इससे पारस्परिक समझ और विश्वास का वातावरण तैयार करने तथा यूरोपीय महाद्वीप में स्थायित्व और सहयोग को मजबूत करने में मदद मिलेगी। हम इन सम्बन्धों को अत्यन्त गम्भीरता से लेते हैं और राजनीतिक तथा सैनिक दोनों स्तरों पर प्रत्येक दिशा में इस संवाद को आगे बढ़ाना चाहते हैं। आज हम नाटो में रूस की सदस्यता पर प्रश्न खड़े कर रहे हैं किन्तु इसे दीर्घकालीन राजनीतिक लक्ष्य माना जा रहा है।"[xcvi] 1998 में रूस जी8 में शामिल हुआ। तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन का विचार था कि इस समूह में रूस को शामिल करने से रूस अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेगा और बाद सोवियत के प्रथम नेता येल्तसिन को लोकतान्त्रिक प्रणाली अपनाने तथा पश्चिमी देशों के निकट आने के लिए प्रोत्साहित करेगा। उन्होंने यह विश्वास भी व्यक्त किया कि सदस्यता से रूस का रुख नर्म करने में मदद मिलेगी क्योंकि पूर्वी यूरोप में पूर्व सोवियत संघ के पिछलग्गुओं के लिए नाटो सुरक्षा एलायंस ने अपने द्वार खोल दिये हैं।[xcvii] दिसम्बर 1996 में दोनों के बीच एक सकारात्मक सहमति प्रारम्भ करने के लिए नाटो के विदेशमन्त्री नाटो-रूस सम्बन्धों के क्षेत्र में प्रगाढ़ता और विस्तार लाने वाली व्यवस्थाओं पर रूसी संघ के साथ अनुबन्ध करने के लिए सहमत हुए जिससे प्राथमिक तौर पर नाटो के विस्तारीकरण के निर्णय के कारण सम्बन्धों पर व्यापक रूप से पड़े नकारात्मक प्रभावों को समाप्त करने में मदद मिलेगी। मई, 1997 में पूर्व राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन और नाटो के 15 अन्य सदस्यों सहित बिल क्लिंटन ने "नाटो तथा रूसी महासंघ के बीच पारस्परिक सम्बन्धों, सहयोग तथा सुरक्षा के फाउण्डिंग अधिनियम" पर हस्ताक्षर किए।" इस अधिनियम का लक्ष्य "विगत संघर्षों तथा प्रतिस्पर्द्धा के चिह्नों को समाप्त करना तथा पारस्परिक विश्वास और सहयोग को सशक्त करना" था।[xcviii]

यह अधिनियम "परामर्शन, सहयोग, संयुक्त निर्णय निर्माण तथा संयुक्त कार्यवाही के लक्ष्यों तथा प्रणाली को परिभाषित करता है जो नाटो तथा रूस के बीच पारस्परिक सम्बन्धों के मूल की स्थापना करेगा।" यह अधिनियम नाटो-रूस स्थायी संयुक्त परिषद की स्थापना करता है।[xcix] इस परिषद का उद्देश्य बाल्कन सहित अनेक क्षेत्रों में मुद्दों को उठाने तथा दोनों पक्षों को सहयोग के लिए नियमित सत्र आयोजित करने का मंच प्रदान करना था।

इस अधिनियम में नाटो द्वारा नाभिकीय हथियारों की नियुक्ति न करने अथवा नये सदस्य राष्ट्रों में सेनाएँ न रखने की प्रतिबद्धता शामिल है और यह यूरोप में अनुकूलित परम्परागत सशस्त्र सेना (सीएफई) सन्धि के लिए मौलिक "क्षेत्र और मानदण्ड" को परिशोधित करता है।[c] रूस के लिए स्पष्ट आश्वासन के रूप में नाटो के विदेशमन्त्रियों ने तथाकथित तीन 'नकार' स्वीकार किये-नाटो देश किसी भी नये सदस्य राष्ट्र के क्षेत्र में नाभिकीय अस्त्र नियुक्त करने का इरादा, योजना तथा कारण नहीं रखते हैं और न तो नाटो के नाभिकीय दृष्टिकोण या नाभिकीय नीति के किसी पहलू को परिवर्तित करने की आवश्यकता है-और हमें भविष्य में ऐसा करने की कोई आवश्यकता प्रतीत होती है। 14 मार्च, 1997 को नाटो के एक अन्य एकपक्षीय वक्तव्य में घोषणा की गयी कि भावी सुरक्षा परिवेश में नाटो प्रबलन हेतु "आवश्यक युद्धक सेनाओं की अतिरिक्त स्थायी तैनाती" के बजाय पारस्परिकता, समेकन तथा क्षमता सुनिश्चित करते हुए अपनी सामूहिक सुरक्षा और अन्य मिशन संचालित करेगा। नाटो रूस को यह आश्वस्त करने का प्रयास कर रहा था कि विस्तारीकरण से कोई वस्तुनिष्ठ सैन्य खतरा या चिन्ता नहीं उत्पन्न होने पायेगी।[ci]

यह अधिनियम यूरोप में साझा और व्यापक सुरक्षा स्थापित करने हेतु मौलिक सिद्धान्तों को स्वीकार करता है। इन सिद्धान्तों में यूरोप में सुरक्षा तथा सहयोग हेतु संगठन को मजबूत करना (ओएससीई), नवीन खतरों तथा चुनौतियों जैसे "आक्रामक राष्ट्रवाद, प्रसार......, आतंकवाद, [तथा] मानव अधिकारों का स्थायी हनन" से निपटना और लोकतन्त्र, राजनीतिक बहुलवाद, कानून के नियम, मानव अधिकारों के सम्मान तथा मुक्त बाजारी अर्थव्यवस्थाओं के विकास के प्रति साझा प्रतिबद्धता पर आधारित नाटो-रूस सम्बन्ध शामिल हैं। नाटो तथा रूस ने एक-दूसरे या अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध खतरे या सेना के प्रयोग न करने, समस्त राष्ट्रों की स्वतन्त्र तथा क्षेत्रीय अखण्डता का सम्मान करने और पारस्परिक पारदर्शिता को बढ़ाने के लिए सीमाओं का उल्लंघन न करने, शान्तिपूर्ण माध्यमों से विवादों का निपटारा करने तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अधीन किये गये शान्तिरक्षा के प्रयासों का "मामले-दर-मामले आधार पर" सहयोग करने की प्रतिबद्धता दर्शाई।[cii]

यह अधिनियम थिएटर मिसाइल रक्षा में सम्भावित परामर्शन, सहयोग तथा वर्धित पारदर्शिता बढ़ाने, "वायु रक्षा तथा एयरस्पेस प्रबन्धन/नियन्त्रण के सम्बद्ध पहलुओं के सम्बन्ध में सूचना" के विनमय,

"नाटो तथा रूस के सिद्धान्तों और नीतियों सहित नाभिकीय हथियार के मुद्दों पर पारस्परिक विनिमय...." को निर्दिष्ट करता है। इस अधिनयम में नाटो का कथन है कि नया सदस्य राष्ट्रों के क्षेत्र में नाभिकीय अस्त्रों की नियुक्ति या भण्डारण करने का इसका "कोई इरादा, कोई योजना तथा कोई कारण नहीं है।"[ciii] फिर भी, यह अधिनियम जटिल है।

इस अधिनियम की पहली समस्या यह है कि यह वैधानिक रूप से बाध्यकारी नहीं है और नाटो ने रूसी सीमा के निकट अपने सैन्य बलों (परम्परागत या नाभिकीय) के प्रचालित न करने का कोई बाध्यकारी वायदा नहीं किया है। इस अधिनियम की एक अन्य चुनौती यह है कि भले ही यह समझौता वैधानिक रूप से बाध्यकारी होता फिर भी रूस के पास वीटो अधिकार नहीं होता।[cv] रूस के स्पष्ट सन्दर्भ में 1995 में नाटो के विस्तारीकरण के अध्ययन में बल दिया गया कि 'एलायंस के बाहर के किसी देश को विस्तारीकरण की प्रक्रिया तथा निर्णयों के सम्बन्ध में वीटो या ड्रोइट डी प्रदान किया जायेगा'. 1997 के प्रथमार्द्ध के दौरान येवगेनी प्रिमाकोव के नेतृत्व में रूसी वार्ताकारों ने त्रिसिद्धान्तों के लक्ष्यों पर ध्यान केन्द्रित किया-नाटो "नाटो" संरचना में कोई विस्तार न किया जाये, यद्यपि इसका भाव जानबूझकर अस्पष्ट रखा गया, एक अन्तिम नाटो-रूस अनुबन्ध जो वैधानिक तौर पर बाध्यकारी हो, तथा एक नवीन रूस-नाटो संस्थागत फोरम या आदर्श रूप में वीटो का अधिकार, जहाँ रूस को नियमित रूप से परामर्शन का अधिकार हो। इस दृष्टि से नाटो देश रूस को उस सीमा तक रियायत देने के इच्छुक थे जब तक वे "पाँच नकारों" का उल्लंघन न करें-विस्तारीकरण की प्रक्रिया में विलम्ब करने का रूसी इरादा न हो, नाटो के विस्तारीकरण निर्णयों या नाटो के आन्तरिक मामलों पर रूस वीटो का उपयोग न करे, विस्तारीकरण की प्रक्रिया से दीर्घकाल में किसी राष्ट्र का बहिष्करण न हो, नये सदस्यों को द्वितीय श्रेणी की सदस्यता न हो, तथा नाटो के निर्णय निर्माण में कोई बाधा न डाली जाये जो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद या किसी अन्य मंच के तहत नाटो के अधीनस्थ से निर्मित हो।[cvi] यदि रूस उत्तरी अटलांटिक संगठन का एक पक्ष होता तो उसे कार्यवाहियों पर वीटा का अधिकार प्राप्त होता; नाटो के सभी सदस्य देशों के पास वीटा अधिकार हैं क्योंकि नाटो बहुमत द्वारा संचालित होता है। ओएससीई के सदस्यों (रूस सहित) के पास वीटो अधिकार हैं; फिर भी यह अधिकार फाउण्डिंग अधिनियम में प्रावधानित नहीं था। रूस को वीटो अधिकार देने से नाटो पक्षों के उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र में सोवियत संघ (अब रूस) या इसके सहयोगियों द्वारा सशस्त्र आक्रमण के विरुद्ध रक्षा करने के लिए संस्थापित संगठन के उद्देश्यों की हार होगी।[cvii]

हेनरी किसिंगर इस अधिनियम से सहमत नहीं थे। 'द वाशिंगटन पोस्ट' में अपने लेख में उन्होंने लिखा, "मैं अत्यन्त चिन्तित हूँ कि पेरिस में अत्यधिक उत्साह के साथ रूस और नाटो के बीच हाल में हस्ताक्षरित तथाकथित फाउण्डिंग अधिनियम का लक्ष्य अटलांटिक एलायंस को सामूहिक सुरक्षा की यूएन-शैली की व्यवस्था में दुर्बल करते हुए रूस को सन्तुष्ट करना है।" उन्होंने आगे कहा, "मैं स्वीकार करता

हूँ कि यदि मुझे नाटो को समग्र रूप से दुर्बल करने की कीमत पर नाटो के विस्तारीकरण किये जाने की जानकारी प्राप्त होती तो मैं इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अन्य साधन अपनाने का निवेदन करता।"[cviii]

3 मार्च, 1998 को 16-2 के मत प्रस्ताव द्वारा अनुमोदित सीनेट फॉरेन रिलेशन्स कमेटी ने कहा कि राष्ट्रपति को यह प्रमाणित करना अपेक्षित है कि फाउण्डिंग अधिनियम तथा पीजेसी में नाटो की नीतियों पर या उत्तरी अटलांटिक परिषद या नाटो के निर्णय-निर्माण पर रूस को कोई वीटो अधिकार नहीं दिया गया है। राष्ट्रपति को अवश्य प्रमाणित करना चाहिए कि पीजेसी में नाटो के उत्तरी अटलांटिक परिषद के समक्ष तब किसी मुद्दे पर चर्चा नहीं की जायेगी जब तक उस प्रश्न पर एक साझा स्थिति न स्वीकार कर ली जाये। सीनेटरों ने अनुभव किया कि विस्तारीकरण से रूस में लोकतन्त्र को कोई खतरा नहीं होगा बल्कि "असलियत को उजागर करने के आवश्यक रूस में राष्ट्रवादी तथा साम्राज्यवादी ताकतों" को नकारते हुए इसे सहारा प्रदान करेगा। 18 मार्च, 1998 में विस्तारीकरण प्रस्ताव पर सीनेट फ्लोर परिचर्चा के दौरान सीनेटर जॉन वार्नर ने कहा था कि विस्तारीकरण रूस का सामना करने वाले देशों का एक "लौह कवच" की रचना कर सकता है।[cix]

2001 में अपने प्रथम कार्यकाल में 18 जुलाई, 2001 को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन ने कहा था कि उनके देश को नाटो में शामिल होने की अनुमति देनी चाहिए या एलायंस को भंग करके ऐसे नये निकाय से प्रतिस्थापित करना चाहे जिसमें सम्पूर्ण यूरोप तथा रूस शामिल हो सके। अपने प्रथम वृहत क्रेमलिन न्यूज कांफ्रेंस में पुतिन यह भी कहा कि अमेरिका द्वारा मिसाइल रक्षा प्रणाली निर्मित करने प्रतिरोध करने के लिए चीन के साथ संयुक्त प्रत्युत्तर देने की रूस की कोई योजना नहीं है। उन्होंने कहा कि सोवियत गुट का विरोध करने के लिए शीत युद्ध के दौरान सृजित अमेरिकी नेतृत्व वाले नाटो गुट ने अपनी उपयोगिता खो दी है।[cx]

उनके अनुसार, शीत युद्ध की समाप्ति तथा सोवियत संघ के विघटन के पश्चात पश्चिमी देशों को कोई खतरा नहीं है अत: नाटो की वैधता शून्य हो जाती है। उन्होंने कहा कि इसके स्थान पर "यूरोप में एकल सुरक्षा तथा रक्षा प्रणाली" सृजित की जानी चाहिए जिसे या तो नाटो को समाप्त करके या रूस को इसमें शामिल करके या ऐसे निकाय की रचना करके जिसमें रूस बराबरी का साझेदार बन सके, तैयार किया जा सकता है।[cxi]

28 मई, 2002 को रोम में नाटो के नेताओं तथा राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन ने समान सदस्यों के बहुमत आधारित निकाय के रूप में नाटो-रूस परिषद (एनआरसी) की स्थापना करते हुए "नाटो-रूस सम्बन्ध : एक नवीन गुणवत्ता" नामक घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किए।[cxii] इस समझौते पर हस्ताक्षर का लक्ष्य साझा हितों के क्षेत्र में तथा दोनों पक्षों की सुरक्षा के प्रति साझा खतरों तथा जोखिमों के विरुद्ध साथ मिलकर

कार्य करने के लिए रूस तथा नाटो की क्षमता में वृद्धि करना था। इस घोषणापत्र में फाउण्डिंग अधिनियम के लक्ष्यों, सिद्धान्तों तथा प्रतिबद्धताओं का पालन तथा समान सदस्यों के अद्वितीय निकाय के रूप में नाटो-रूस परिषद की स्थापना करना जो सहमति के आधार पर निर्णय ले सके, का अनुपालन करना सुनिश्चित किया गया।[cxiii] उन्होंने विशेष रूप से लोकतन्त्र के सिद्धान्तों तथा सहयोगपरक सुरक्षा पर यूरो-अटलांटिक क्षेत्र में दीर्घकालिक तथा समावेशी शान्ति निर्मित करने तथा यूरो-अटलांटिक समुदाय में सभी राज्यों की सुरक्षा की अविभाज्यता के सिद्धान्त के प्रति अपनी दृढ़ता सहित इसके लक्ष्यों, सिद्धान्तों तता प्रतिबद्धताओं की पुष्टि की। इस सन्दर्भ में दोनों पक्षों ने निश्चय किया कि वे यूएन चार्टर, हेलसिंकी फाइन एक्ट के प्रावधानों और सिद्धान्तों तथा यूरोपीय सुरक्षा के लिए ओएससीई चार्टर सहित अन्तर्राष्ट्रीय कानून के तहत अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे।[cxiv]

एनआरसी से आतंकवाद निरोध, संकट प्रबन्धन, अस्त्र नियन्त्रण तथा थिएटर मिसाइल रक्षा सहित अनेक क्षेत्रों में सहयोग में प्रबलता आई। नाटो तथा रूस ने अफगानिस्तान में आईएसएएफ मिशन को समर्थन देने के लिए परस्पर सहयोग किया। आईएसएएफ के लिए पारगमन मार्ग का प्रावधान करना, इस क्षेत्र की पुलिस तथा सीमा-शुल्क को मादक पदार्थों के निरोध का प्रशिक्षण तथा अफगान सेना की हेलीकॉप्टर फ्लीट की सहायता करना संयुक्त कार्य में शामिल थे।[cxv] नाटो-रूस परिषद के ढाँचे में नाटो के सदस्य राष्ट्र तथा रूस साझा हितों के क्षेत्र में समान साझेदार के रूप में कार्य करेंगे। एनआरसी का निर्माण पारस्परिक संलिप्तता बढ़ाने के लिए 1997 के फाउंडिंग एक्ट के आधार पर किया गया। एक अन्तर है कि एनआरसी एक सशक्त तथा हठधर्मी रूस (वह देश जो अपने ऊर्जा राजस्व के कारण सशक्त आर्थिक विकास कर रहा है) का चित्रण करता है जो 1997 के दौरान का मामला नहीं था, क्योंकि यह अपनी आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं के साथ अब भी संघर्ष कर रहा है। फिर भी यह सुविचार दोनों पक्षों के मध्य तीव्र अविश्वास तथा युद्ध सम्बन्धी महत्त्वाकांक्षाओं के कारण अधिक समय तक नहीं चला।

निष्कर्ष

रूस तथा नाटो के सम्बन्ध सुखकारी नहीं रहे हैं और यह क्षेत्र की शान्ति तथा स्थिरता को खतरे में डालता है, जिसका अप्रत्यक्ष प्रभाव पूरे विश्व पर पड़ेगा। स्थिति अत्यन्त भयावह है क्योंकि दोनों पक्षों ने रक्षा प्रणालियों के निर्माण के अतिरिक्त तीखी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करनी प्रारम्भ कर दी हैं जिससे संघर्ष के लिए क्षेत्र में अनुकूल स्थितियाँ बन रही हैं।

रूस के अनुसार अमेरिका नाटो का प्रयोग यूरोप में अपने प्रभाव को बढ़ाने के उपकरण के रूप में कर रहा है।[cxvii] अमेरिकी सचिव ने कहा कि यदि रूस प्रतिबन्धों को समाप्त करवाना चाहता है तो इसे 2015 के मिंस्क शान्ति समझौते को पूर्ण रूप से क्रियान्वित करना होगा। ओबामा प्रशासन तथा पश्चिमी देशों के

अनुसार वे रूस से ऐसी गतिविधियों की आशा करते हैं जो यूक्रेन की प्रभुसत्ता का सम्मान करे जैसा कि वह स्वयं के लिए चाहता है।[cxviii]

रूस ने पश्चिमी देशों और विशेष रूप से अमेरिका के प्रति जो नई रणनीति अपनाई है वह है "कोल्ड शोल्जर" या "हाइब्रिड वार" की नीति। "कोल्ड शोल्जर" नीति पश्चिमी देशों के लिए अधिक समस्यापरक होगी क्योंकि इसमें कठोर और मुलायम शक्ति का मिश्रण होगा जो पश्चिमी देशों को आश्चर्यचकित कर सकता है। अपने देश की छवि बचाने के लिए रूसी राष्ट्रपति पुतिन कुछ भी कर सकते हैं। वह उस निमग्न लागत के प्रति सचेत हैं जो किसी भी संघर्ष में निहित है, राष्ट्रवाद का उपयोग करते हुए उन्हें अपनी जनता का भी समर्थन प्राप्त होगा। व्यापक स्तर पर रूसी जनता उन प्रतिबन्धों के कारण पश्चिमी देशों के विरुद्ध है जिससे वे त्रस्त हैं। 2017 तक प्रतिबन्धों के विस्तार के कारण दोनों पक्षों के बीच सम्बन्धों में सुधार नहीं होगा क्योंकि यह सोवियत संघ कालीन कठिनाइयों का स्मारक हो सकता है। रूस की प्रमुख समस्या पूर्ववर्ती की निरन्तरता है जो कि अमेरिका के साथ इसका समीकरण है।

अमेरिका के नेतृत्व में पश्चिमी देश हितों के टकराव के कारण रूस को समानता का प्लेटफॉर्म प्रदान करने के लिए उत्सुक नहीं प्रतीत होते हैं। यह देखा गया है कि जब भी रूस को अमेरिका द्वारा विश्व व्यवस्था में सशक्त खिलाड़ी के रूप में महत्त्व दिया गया है तो मास्को ने विश्व शान्ति तथा स्थिरता को खतरे में डालने वाली चुनौतियों को हल करने में मदद की है। उदाहरण के लिए, रूस ने ईरान के नाभिकीय डील के समाधान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।[cxx] यदि पश्चिमी देश रूस के बराबरी का साझेदार मानते हैं और उसके प्रभाव क्षेत्र में विस्तार नहीं करते हैं तो क्रेमलिन आईएसआईएस सहित वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में उनका साझेदार होगा। फिर भी नाटो की ओर से उचित विश्वास और आत्मविश्वास निर्माण करने की आवश्यकता है। यदि रूस को उचित सम्मान देते हुए पश्चिमी देश रूस के साथ उचित और विश्वसनीय सम्बन्ध निर्मित करने में सफल होते हैं तो शान्ति, स्थायित्व, लोकतन्त्र, पारस्परिक समृद्धि, मानव अधिकार आदि के वैश्विक मानवीय मूल्यों को सुरक्षित करना सरल होगा जो कि वर्तमान में एक दुर्लभ स्थिति प्रतीत होती है।

*****

**डॉ. इन्द्राणी तालुकदार, विश्व मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली में शोधकर्ता*

<u>अंत टिप्पण:</u>

---

[i] Ian Traynor, "Nato moves to bolster eastern European defences against Russia," *The Guardian*, April 1, 2014. http://www.theguardian.com/world/2014/apr/01/nato-eastern-europe-defences-russia-putin-crimea (Accessed on March 3, 2016).

[ii] "Russia A strategic security dilemma in Eastern Europe," *Risk Advisory*, June 26, 2015. https://news.riskadvisory.net/2015/26/russia-a-strategic-security-dilemma-in-eastern-europe/ (Accessed on March 3, 2016).

[iii] David A. Shalpak and Michael W. Johnson, ―Reinforcing Deterrence on NATO's Eastern Flank," *RAND*, p.1. https://www.rand.org/content/dam/rand/pubs/research_reports/RR1200/RR1253/RAND_RR1253.pdf. (Accessed on February 26, 2016).

[iv] "NATO plans 40,000-strong rapid response force in E. Europe," *RT*, June 22, 2015. https://www.rt.com/news/268825-nato-rapid-response-stoltenberg/ (Accessed on March 7, 2016).

[v] "Fact Sheet: NATO Response Force (NRF)," *NATO*. https://www.shape.nato.int/page349011837 (Accessed on March 4, 2016).

[vi] Helen Womack, ―Tensions rise as NATO moves to blunt Russia's Eastern European build-up,‖ *The Sydney Times*, February 13, 2016. http://www.smh.com.au/world/nato-moves-to-squeeze-russia-out-as-risk-of-unintended-war-in-eastern-europe-rises-20160211-gms2yt.html (Accessed on March 8, 2016).

[vii] Leo Michel, ―Deterring Russia: Has NATO Succeeded," *The Journal of International Security Affairs*, Spring/Summer 2015, No.28, p.2. http://www.securityaffairs.org/issues/number-28/deterring-russia-has-nato-succeeded (Accessed on March 8, 2016).

[viii] *Johannes Stern, "NATO doubles combat forces in Eastern Europe,"* World Socialist Web Site*, February 6, 2015. https://www.wsws.org/en/articles/2015/02/06/nato-f06.html (Accessed on March 4, 2016).*

[ix] "Fact Sheet: NATO Response Force (NRF)," *op.cit.*

[x] Michel, "Deterring Russia: Has NATO Succeeded," *op.cit*.

[xi] "NATO members start supplying weapons to Kiev – Ukrainian Defense Minister," *RT*, September 14, 2014. https://www.rt.com/news/187688-nato-weapons-supply-ukraine/ (Accessed on March 3, 2016).

[xii] Michel, "Deterring Russia: Has NATO Succeeded," *op.cit*.

[xiii] "Ukraine hosts military drills led by US and joined by NATO," *RT*, September 15, 2014. https://www.rt.com/news/187872-us-drills-nato-ukraine/ (Accessed on March 4, 2016).

[Xiv] "NATO-Russia relations: The facts," *op. cit*.

[xv] Robbie Gramer, "The New Thorn in Russia's Side," *Foreign Affairs*, December 24, 2015. https://www.foreignaffairs.com/articles/yugoslavia-montenegro/2015-12-24/new-thorn-russias-side (Accessed on March 1, 2016).

xvi Martin Hurt, "Preempting Further Russian Aggression against Europe," *The Heritage Foundation*, 2016 Index of U.S. Military Strength, pg.38. http://index.heritage.org/military/2016/essays/preempting-further-russian-aggression/ (Accessed on March 10, 2016). The term ―snap exercises‖ (sometimes called ―snap inspections‖) refers to major military exercises ordered with little or no notice. Ibid.

[xvii] "Russian coastal defenses in Crimea stage target practice amid NATO drills in Black Sea," *RT*, September 10, 2014. https://www.rt.com/news/186456-russia-black-sea-bastion/ (Accessed on March 5, 2016).

[Xviii] Thomas Frear, "List of Close Military Encounters between Russia and the West: March 2014 to March 2015," *European Leadership Network*. http://www.europeanleadershipnetwork.org/medialibrary/2015/03/11/4264a5a6/ELN%20Russia%20-%20West%20Full%20List%20of%20Incidents.pdf (Accessed on March 7, 2016).

[Xix] "Only Russia' dangerously probes British airspace, says source," *Euronews*, January 30, 2015. http://www.euronews.com/2015/01/30/only-russia-dangerously-probes-british-airspace-says-source/ (Accessed on March 7, 2016).

[xx] Damien Sharkov, "Putin Orders Snap Military Drills on NATO Border," *Newsweek*, December 16, 2014, http://www.newsweek.com/putin-orders-snap-military-drills-russian-troops-nato-border-292308 (Accessed on March 10, 2016).

[xxi] Martin Hurt, "Swedish Security and Defense in 2014 as Seen from the East," International Centre for Defence and Security, January 2015, p. 2, http://www.icds.ee/fileadmin/media/icds.ee/failid/Martin_Hurt_-_Swedish_Security_and_Defence_in_2014_as_Seen_from_the_East.pdf (Accessed on March 10, 2016).

[xxii] "Russia Carries out Snap Check of Paratroopers in Western Russia," *Reuters*, February 16, 2015, http://in.reuters.com/article/2015/02/16/ukraine-crisis-russia-drill-idINL5N0VQ36920150216 (Accessed on March 10, 2016).

[xxiii] "Military Drills Get Underway in Russia with 1,500 Paratroopers Taking Part," *Sputnik*, February 26, 2015, http://sputniknews.com/russia/20150226/1018775269.htm (Accessed on March 10, 2016).

[xxiv] "Russia Targets NATO with Military Exercises," *Stratfor*, March 19, 2015, https://www.stratfor.com/analysis/russia-targets-nato-military-exercises (Accessed on March 10, 2016).

[xxv] Thomas Grove, "Russia Starts Nationwide Show of Force," Reuters, March 16, 2015, http://www.reuters.com/article/2015/03/16/us-russia-military-exercises-idUSKBN0MC0JO20150316 (Accessed on March 10, 2016).

[xxvi] Holly Elliot, "Russia warns of 'new military confrontation' in Europe," *CNBC*, June 15, 2015. http://www.cnbc.com/2015/06/16/russia-warns-of-new-military-confrontation-in-europe.html (Accessed on March 8, 2016).

[xxvii] *David Rising, "Russian PM: West is restarting Cold War with NATO moves,"* The Japan Today, *February 14, 2016. http://www.japantoday.com/category/world/view/russian-pm-west-is-restarting-cold-war-with-nato-moves (Accessed on February 16, 2016).*

[xxviii] *"Speech by NATO Secretary General Jens Stoltenberg at the Munich Security Conference,"* North Atlantic Treaty Organisation, *February 13, 2016. http://www.nato.int/cps/en/natohq/opinions_128047.htm (Accessed on February 17, 2016).*

[xxix] "Deterrence: what it can (and cannot) do," *NATO Review*. http://www.nato.int/docu/Review/2015/Also-in-2015/deterrence-russia-military/EN/index.htm (Accessed on February 16, 2016). Perceived by many as a mere relic of the Cold War, the Russia-Ukraine crisis has hastened its resurrection. Deterrence is the threat of force in order to discourage an opponent from taking an unwelcome action. This can be achieved through the threat of retaliation (deterrence by punishment) or by denying the opponent's war aims (deterrence by denial). Maintenance of credibility through deterrence is important. Many studies about human behaviour demonstrate that people who fear to lose something valuable are ready to take greater risks than those who hope to make a gain. NATO is alert and is not overlooking on the 'element of surprise' as a strategy by opponents. For examples, during the World War II, Japan used the element of surprise when they attacked Pearl Harbour and Syria and Egypt's attack on Israel in 1973. Military superiority does not ensure deterrence. Ibid.

[xxx] Rising, "Russian PM: West is restarting Cold War with NATO moves," *op.cit*.

[xxxi] "Russian National Security Strategy Envisages Fighting Terrorism—Security Council Chief," *TASS*, December 22, 2015. http://tass.ru/en/politics/846130 (Accessed on February 19, 2016).

[xxxii] Rebecca Keel, 'Top US commander: Russia wants to 'rewrite' international order,' *The Hill*, February 25, 2016. http://thehill.com/policy/defense/270796-top-us-commander-russia-wants-to-rewrite-international-order (Accessed on February 27, 2016).

[xxxiii] 'NATO Commander: Russia Poses 'Existential Threat' To West,' *Radio Free Europe Radio Liberty*, February 25, 2016. http://www.rferl.org/content/nato-breedlove-russia-existential-threat/27574037.html (Accessed on February 27, 2016).

[xxxiv] 'Pentagon attacks on Russia linked to military budget debate in Congress – MoD,' *RT*, February 26, 2016. https://www.rt.com/news/333669-us-nato-russia-threat/ (Accessed on February 27, 2016).

xxxv Oren Dowell, 'Latvia wants greater NATO presence to offset Russia,' *USA Today*, February 27, 2016. http://www.usatoday.com/story/news/world/2016/02/27/latvia-wants-greater-nato-presence-offset-russia/81009982/ (Accessed on February 29, 2016).

xxxvi Olga Oliker, 'Unpacking Russia's New National Security Strategy,' *Center for Strategic and International Studies*, January 7, 2016. http://csis.org/publication/unpacking-russias-new-national-security-strategy (Accessed on February 28, 2016).

xxxvii Ibid.

xxxviii In Ukraine in 2013, bio-laboratories were opened in Vinnytsia, Ternopil, Uzhhorod, Kiev, Dnepropetrovsk, Simferopol, Kherson, Lviv (three laboratories at once in this town) and Lugansk with the support of the US. Leonid Savin, 'On the Pentagon's Biological Laboratories in Ukraine', *Strategic Culture Foundation*, November 24, 2014. http://www.strategic-culture.org/news/2014/11/24/pentagon-biological-laboratories-ukraine.html (Accessed on March 21, 2016).

xxxix Henry Kamen, 'Lugar Bio Laboratory in Tbilisi Latest: It's Getting Worse by the Day', *New Eastern Outlook*, January 31, 2016. http://journal-neo.org/2016/01/31/lugar-bio-laboratory-in-tbilisi-latest-it-s-getting-worse-by-the-day/ (Accessed on March 22, 2016).

xl Alex Pasternack, 'Why the U.S. is Building a High-Tech Bubonic Plague Lab in Kazakhstan', *Popular Science*, August 29, 2013. http://www.popsci.com/technology/article/2013-08/why-us-building-high-tech-bubonic-plague-lab-kazakhstan (Accessed on March 21, 2016).

xli "Scientists from 3 countries join forces to keep you safe", *Share America*, February 4, 2016. https://share.america.gov/scientists-from-3-countries-are-keeping-you-safe/ (Accessed on March 21, 2016).

xlii Dimtry Popov, "Kazakhstan Biological Laboratories: What does Pentagon Need this for?" *Strategic Culture Foundation*, January 1, 2014. http://www.strategic-culture.org/news/2014/01/09/kazakhstan-biological-laboratory-what-does-pentagon-need-it-for.html (Accessed on March 21, 2016).

xliii Savin, "On the Pentagon's Biological Laboratories in Ukraine", *op. cit*.

xliv Dmitry Popov, "US Formed Around the Russian System of Military-Biological Objects," *Russian Institute of Strategic Studies*, April 25, 2014. http://riss.ru/analitycs/5521/ (Accessed on February 29, 2016).

xlv "Scientists from 3 countries join forces to keep you safe", *op. cit*.

xlvi "Shooting TV group was admitted to the Laboratory, Lugar", *apsnyge.com*, August 6, 2013. http://www.apsny.ge/2013/soc/1375833700.php (Accessed on March 22, 2016).

xlvii Kamen, "Lugar Bio Laboratory in Tbilisi Latest: It's Getting Worse by the Day", *op.cit*.

xlviii Popov, "US Formed around the Russian System of Military-Biological Objects," *op. cit*.

xlix Oliker, "Unpacking Russia's New National Security Strategy," *op.cit*.

l *Jeffrey K. Silverman "Georgia to open Lugar bio-lab to Russian experts" – a bit late, the horse done ran off … escaped!!!",* Veterans Today, *October 6, 2013.* *http://www.veteranstoday.com/2013/10/06/georgia-to-open-lugar-biolab-to-russian-experts/* *(Accessed on March 22, 2016).*

li *Kazakhstan had offered the US to open its military bases in the former's soil when the Manas Transit Center had to be closed down. Daniyar Karimov, "Kazakhstan Suggested US to Open Military Base on its Territory",* Global Research, *April 14, 2010.* *http://www.globalresearch.ca/kazakhstan-suggested-us-to-open-military-base-on-its-territory/18661* *(Accessed on March 21, 2016).*

lii "Medvedev: Russia's 2008 War in Georgia Set Back NATO Expansion," *Novinite*, November 21, 2011. http://www.novinite.com/articles/134156/Medvedev%3A+Russia's+2008+War+in+Georgia+Set+Back+NATO+Expansion (Accessed on March 1, 2016).

liii Mark Tran, "Medvedev warns against Nato admission for Russian neighbours," *The Guardian*, March 25, 2008. http://www.theguardian.com/world/2008/mar/25/russia.ukraine (Accessed on March 1, 2016).

liv Lionel Barber, Neil Buckley and Catherine Belton, "Medvedev warns against expanding Nato east," *Financial Times*, March 24, 2008. http://www.ft.com/intl/cms/s/0/50ff806e-f9b6-11dc-9b7c-000077b07658.html#axzz41cnrZskU (Accessed on March 1, 2016).

lv Stanley Kober, "NATO Expansion and the Danger of a Second Cold War," *CATO Foreign Policy Briefing No.38*, January 31, 1996. http://www.cato.org/pubs/fpbriefs/fpb-038.html (Accessed on March 2, 2016).

lvi "NATO-Russia relations: the facts," *NATO,* December 17, 2015. http://www.nato.int/cps/in/natohq/topics_111767.htm? (Accessed on March 1, 2016). The NATO also feels that when Russia signed the Founding Act, it pledged to uphold "*respect for sovereignty, independence and territorial integrity of all states and their inherent right to choose the means to ensure their own security*". Hence, the NATO goes by this argument that Ukraine has the right to choose its own alliances, and Russia has, by its own repeated agreement, no right to dictate that choice. Ibid. The Helsinki Act also bounds its signatories—including the Soviet Union and members of the Warsaw Pact—to respect the fundamental freedom of their citizens, including freedom of thought, conscience, religion or belief. Soviet rulers attached more importance to the Western recognition of the Soviet role in Eastern Europe rather than to the foundation of beliefs laid down in the Act. "A Short History of NATO," *NATO*. htpp://www.nato.history/nato-histroy.html/ (Accessed on March 2, 2016).

lvii Steven Woehrel, "NATO Enlargement and Russia," *Defence Technical Information Center (DTIC),* 97-477 F, April 14, 1998, pg.2. file:///C:/Users/Lenovo/Downloads/ADA473645.pdf (Accessed on February 29, 2016).

lviii Mark Kramer, "The Myth of a No-NATO-Enlargement Pledge to Russia," *CSIS*. http://csis.org/files/publication/twq09aprilkramer.pdf (Accessed on February 24, 2016).

lixWoehrel, "NATO Enlargement and Russia," *op.cit*.

lx Patrick Martin, "NATO begins anti-Russian air drill in Arctic", World Socialist State, *May 26, 2015. https://www.wsws.org/en/articles/2015/05/26/nato-m26.html (Accessed on March 22, 2016).*

lxi Brian Murphy, "For Russia's church leader, a trip to Antarctica is not just a photo op," *The Washington Post*, February 18, 2016. https://www.washingtonpost.com/news/worldviews/wp/2016/02/18/for-russias-church-leader-a-trip-to-antarctica-is-not-just-a-photo-op/ (Accessed on February 19, 2016).

lxii Rick Rozoff, "Scramble for World Resources: Battle for Antarctica", *Antiwar Literary and Philosophical Selections*, May 16, 2009. https://rickrozoff.wordpress.com/2009/08/28/scramble-for-world-resources-battle-for-antarctica/ (Accessed on March 22, 2016).

lxiii Shalpak and Johnson, "Reinforcing Deterrence on NATO's Eastern Flank," *op.cit*.

lxiv "From Cold War to Hot War," *The Economist*, February 14, 2015. http://www.economist.com/news/briefing/21643220-russias-aggression-ukraine-part-broader-and-more-dangerous-confrontation (Accessed on February 29, 2016).

lxv Shalpak and Johnson, "Reinforcing Deterrence on NATO's Eastern Flank", *op.cit*.

lxvi Matthew Bodner, "Russia's Military Is a Paper Tiger in the Baltic‖, Institute of Modern Russia, August 25, 2016. http://imrussia.org/en/analysis/world/2389-russias-military-is-a-paper-tiger-in-the-baltic (Accessed on March 14, 2016).

lxvii "NATO Air Policing‖, *NATO Allied Air Command*. https://www.ac.nato.int/page5931922/-nato-air-policing (Accessed on March 23, 2016).

lxviii Bodner, "Russia's Military Is a Paper Tiger in the Baltic", Institute of Modern Russia, op. cit.

lxix John Vandiver, "Report: Russia Defeats NATO in Baltic War Game", *Military dot com*, February 5, 2016. http://www.military.com/daily-news/2016/02/05/report-russia-defeats-nato-in-baltic-war-game.html (Accessed on March 1, 2019).

lxx Woehrel, "NATO Enlargement and Russia‖, *op. cit.* pg.2.

lxxi Ibid, pg.2 and pg.4.

lxxii "Yeltsin Warns against Baltic Accession to NATO‖, *Jamestown Foundation*, May 20, 1997. http://www.jamestown.org/single/?tx_ttnews%5Btt_news%5D=6832&tx_ttnews%5BbackPid%5D=211&no_cache=1#.VuaBKvl97IU (Accessed on March 14, 2016).

lxxiii Woehrel, "NATO Enlargement and Russia", *op.cit.*, pp.4-5.

lxxiv Dmitri Trenin, "Russia-NATO relations: Time to pick up the pieces," *NATO Review*, Vol. 48 - No. 1, Spring-Summer 2000, p. 20. http://www.nato.int/docu/review/2000/0001-06.htm (Accessed on March 1, 2016).

lxxv "NATO-Russia Relations: The Background," *Media Backgrounder*, NATO, January 2016. http://www.nato.int/nato_static_fl2014/assets/pdf/pdf_2016_01/20160120_1601-backgrounder_nato-russia_en.pdf (Accessed on February 25, 2016).

lxxvi Trenin, "NATO and Russia: Partnership or Peril?" *op.cit.* pg. 299.

lxxvii "NATO-Russia Relations: The Background," *op.cit*.

lxxviii Robert Coalson, "News Analysis: Russian Build-up Focuses Concerns around the Black Sea," *Radio Free Europe Radio Liberty*, February 23, 2016. http://www.rferl.org/content/russia-black-sea-military-buildup-turkey/27569877.html (Accessed on February 29, 2016).

lxxix "Russia To Create New Military Divisions In Response To NATO," *Radio Free Europe Radio Liberty*, February 22, 2016. http://www.rferl.org/content/russia-new-military-divisions-nato/27503176.html (Accessed on February 29, 2016).

lxxx "Russian National Security Strategy Envisages Fighting Terrorism," *op.cit.*

lxxxi Luis José Rodrigues Leitão Tomé, "Russia and NATO Enlargement," *NATO Research Fellowship Programme 1998-2000*, Final Report, June 2000, pp.14-15, 16. http://www.nato.int/acad/fellow/98-00/tome.pdf (Accessed on March 3, 2016).

lxxxii Quoted verbatim from the text of "U.S. Policy towards NATO Enlargement," Hearing Before the Committee on International Relations, House of Representatives, One Hundred Four Congress June 20, 1996, p. 5.

lxxxiii "U.S. Policy Towards NATO Enlargement," Hearing Before the Committee on International Relations, House of Representatives, One Hundred Four Congress, June 20, 1996, p. 5, p.11 and p.15. https://archive.org/stream/uspolicytowardna00unit#page/n1/mode/2up (Accessed on March 3, 2016).

lxxxiv "U.S. Policy toward NATO Enlargement," United States House of Representatives 104th Congress, Second Session in June 20, 1996. http://www.americanhungarianfederation.org/docs/AHF_NATO_SenateTestimony_1996.pdf (Accessed on March 3, 2016).

lxxxv Ibid.

lxxxvi Ivan Gabal, Lenka Helsusova, and Thomas Szayna, "The Impact of NATO Membership in the Czech Republic", *RAND*, http://www.rand.org/natsec_area/products/czechnato.html (Accessed on March 22, 2016).

lxxxvii "NATO welcomes seven new members", *NATO Updates*, April 2, 2004. http://www.nato.int/docu/update/2004/04-april/e0402a.htm (Accessed on March 22, 2016).

lxxxviii Rising, "Russian PM: West is restarting Cold War with NATO moves," *op.cit*.

lxxxix Mikhail Molchanov, "Russia's new security strategy: Why is the Kremlin so threatened by NATO?" *Russia Direct*, January 11, 2016. http://www.russia-direct.org/opinion/russias-new-security-strategy-why-kremlin-so-threatened-nato (Accessed on March 1, 2016).

Xc Eugene Chausovsky, "On the Origins of a Conflict," *Stratfor*, December 28, 2015. https://www.stratfor.com/analysis/origins-conflict (Accessed on March 1, 2016).

Xci From Cold War to Hot War," *The Economist*, op.cit.

Xcii "Russian prime minister: West is rekindling the Cold War with NATO moves", *Chicago Tribune*, February 13, 2016. http://www.chicagotribune.com/news/nationworld/ct-new-cold-war-20160213-story.html (Accessed on March 22, 2016).

Xciii Rising, "Russian PM: West is restarting Cold War with NATO moves," *op.cit.*

Xciv "From Cold War to Hot War," *The Economist*, op.cit. The West is uncomfortable with Russia's less military ways such as antiestablishment of political parties, disgruntled minority groups, media outlets, environmental activists, propagandist think-tanks etc. Ibid.

xcv Trenin, "NATO and Russia: Partnership or Peril?" *op.cit*. pg. 299.

xcvi Thomas L. Friedman, "Soviet Disarray; Yeltsin Says Russia Seeks to Join NATO", *The New York Times*, December 21, 1991. http://www.nytimes.com/1991/12/21/world/soviet-disarray-yeltsin-says-russia-seeks-to-join-nato.html (Accessed on March 23, 2016). But according to the then NATO's Secretary General, Manfred Worner, Mr. Yeltsin did not apply for the membership. Ibid.

xcvii Zachary Laub and James Mcbride, "The Group of Seven (G7)", *Council on Foreign Relations*, June 2, 2015. http://www.cfr.org/international-organizations-and-alliances/group-seven-g7/p32957 (Accessed on March 23, 2016). Russia was admitted in the G7 group in 2002.

Xcviii Jack Mendelsohn, "The Russian Founding Act," *Arms Control Association*, 1997. https://www.armscontrol.org/act/1997_05/jm (Accessed on February 29, 2016).

Xcix Ibid.

c Ibid.

ci Tome, "Russia and NATO Enlargement", *op. cit.*, pg.23.

cii Mendelsohn, "The Russian Founding Act," *op. cit.*

ciii Ibid.

civ Otfried Nassauer and Oliver Meier, "The NATO-Russia "Founding Act": Stepping Stone or Stumbling Block for a European Security Architecture?‖ *Berlin Information-centre for Transatlantic Security (BITS)*, Summit Briefing Paper 97.1, July 4, 1997. http://www.bits.de/public/briefingpaper/bp97-1.htm (Accessed on February 29, 2016).

[cv]Myron H. Nordquist, "The Framework in the Founding Act for NATO-Russia Joint Peacekeeping Operations,‖ *International Law Studies*, Volume 72, pg.146 and pg.136. file:///C:/Users/Lenovo/Downloads/vol-72_VII_nordquist_the_framework.pdf (Accessed on February 29, 2016).
[cvi]Roland Dannreuther, "Russian Perceptions of the Atlantic Alliance," *Final Report for the NATO Fellowship - 1995-1997*, pg.20 and pg.22. http://www.nato.int/acad/fellow/95-97/dannreut.pdf (Accessed on March 23, 2016).
[cvii]Nordquist, "The Framework in the Founding Act for NATO-Russia Joint Peacekeeping Operations," *op.cit.*
[cviii]Henry Kissinger, "The Dilution of NATO," *The Washington Post*, June 8, 1997. https://www.washingtonpost.com/archive/opinions/1997/06/08/the-dilution-of-nato/dad33a8c-0296-4625-9376-bc0f1013c318/ (Accessed on February 29, 2016).
[cix]Woehrel, "NATO Enlargement and Russia," *op. cit.*, pg.7.
[cx] "Putin wants NATO to let Russia Join," *Desert Rose*, July 18, 2001. http://www.deseretnews.com/article/853851/Putin-wants-NATO-to-let-Russia-join.html?pg=all (Accessed February 29, 2016).
[cxi]Ibid.
[cxii] "NATO-Russia Relations: The Background," *Media Backgrounder*, NATO, January 2016. http://www.nato.int/nato_static_fl2014/assets/pdf/pdf_2016_01/20160120_1601-backgrounder_nato-russia_en.pdf (Accessed on February 25, 2016).
[cxiii] http://www.nato.int/nato_static_fl2014/assets/pdf/pdf_2014_09/20140901_140901-Backgrounder_NATO-Russia_en.pdf (Accessed on March 23, 2016).
[cxiv] "NATO-Russia Relations: A New Quality‖, *NATO*, May 28, 2002. http://www.nato.int/cps/en/natolive/official_texts_19572.htm?selectedLocale=en (Accessed on March 23, 2016).
[cxv] "NATO-Russia Relations: The Background," *Media Backgrounder*, op.cit.
[cxvi] "NATO-Russia Relations: A New Quality", *NATO*, op.cit.
[cxvii] "Lavrov: US uses NATO as instrument of influence in Europe," *TASS*, December 30, 2016. http://tass.ru/en/politics/847921 (Accessed on February 29, 2016).
[cxviii] Kramer, "The Myth of a No-NATO-Enlargement Pledge to Russia," *op.cit*.
[cxix] Mujib Mashal and Andrew E. Kramer, "From Cold War to cold shoulder: Russia cools on aiding U.S. in Afghanistan", *Santa Fe Mexican News*, February 20, 2016. http://www.santafenewmexican.com/news/from-cold-war-to-cold-shoulder-russia-cools-on-aiding/article_30dfda9a-65ca-54ff-ae9c-eb268b6f44bb.html (Accessed on February 23, 2016).
[cxx] Although there are many factors involved in the resolution of the Iranian nuclear deal, but Russia's role cannot be overlooked.